आर.एन.आई. नं. एम.ए.आर./2000/2438
डाक पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/44/2021–23
"चतुर्वेदी चन्द्रिका" अगस्त 2023

प्रकाशन : 03 तारीख
पृष्ठ संख्या : 36
मूल्य : 20/–

स्थापना – माघ/शुक्ल पूर्णिमा सम्वत् 1947 सन् 1890

चतुर्वेदी चन्द्रिका

। वर्ष –24 । अंक–08 । श्रावण –भाद्रपद मास । अगस्त 2023

Lieutenant General
Vishnu Kant Ji

Air Marshal
Kirti Shekhar Ji

Major General
Nilendra Kumar Ji

Major General
Ajay Kumar Ji

Air Vice Marshal
Shishir Kumar Ji

Brigadier Dipendra Ji

Air Commodore
Ashutosh Ji

Colonel Nishant Ji

शौर्य अंक

Colonel Saurabh Ji

Lieutenant Colonel
Bharat Ji

Wing Commander
Aniruddh Kumar Ji

Wing Commander
Akshat Ji

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा का मुखपत्र

प्रथम पुण्यतिथि

स्व. श्री नील रत्न चतुर्वेदी

सुपुत्र स्व. श्री श्रीकृष्ण चतुर्वेदी (कमतरी / आगरा)

जन्म : 22 अगस्त 1939 : अवसान : 04 जुलाई 2022

आप की प्रथम पुण्यतिथि पर हम आपको हार्दिक श्रद्धाँजलि अर्पित करते हुए कोटि-कोटि नमन करते हैं। आप की मधुर स्मृति, स्नेह, आदर्श, मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद सदैव हमारे प्रेरणास्रोत रहेंगे।

श्रद्धावनत

श्री श्रीकृष्ण बाबा परिवार | श्री श्यामसुंदर बाबा परिवार | श्री हरिचरण बाबा परिवार

पत्नी : श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी

पुत्र - पुत्रवधु : तरुण - निधी (नेहा), नीरज-प्रीती (मेघा)

नातिन - नाती : निष्ठा, नमन, सार्थक

निवास

107, पुष्पांजलि टावर एक्सटेंशन, दिल्ली गेट. आगरा (उ.प्र.) 282002

संपर्क : 9927100240 / 9650022838

(र.क्र. 2023/1496)

चतुर्वेदी चन्द्रिका

अपनों से मन की बात	4
संपादकीय	5
सशस्त्र सेनाओं में चतुर्वेदीयों का योगदान	7
आजाद हिन्द फौज में सरदारे जंग- 'शेरेहिन्द	13
कैप्टन भरतचंद्र पाठक वीर चक्र से सम्मान	14
थल सेना में मान - समाज का सम्मान	15
लेफ्टिनेंट जनरल विष्णुकान्त चतुर्वेदी	16
मातृभूमि के सेवक- मेजर जनरल अजय चतुर्वेदी	17
मेजर जनरल महेन्द्र नाथ रावत	19
गौरव गाथा की मूर्ति - स्व. ब्रिगेडियर नरेन्द्र नाथ रावत....	21
सैन्य परम्परा की एक और कड़ी - ब्रिगेडियर दीपेन्द्र रावत	22
एयर मार्शल कीर्ति शेखर चतुर्वेदी	24
एयर वाइस मार्शल शिशिर कुमार चतुर्वेदी	25
कौन था पहला कावड़िया	26
महामृत्युंजय मंत्र	27
समाज समाचार	33
बिछड़े स्वजन	34

अंक 08
अगस्त 2023, वर्ष - 24

सभापति
डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी
president@chaturvedimahasabha.in

सचिव
श्री मुनीन्द्रनाथ चतुर्वेदी
मोबा. 098711-70559

कोषाध्यक्ष
श्री महेशचन्द्र चतुर्वेदी
मोबा. 09868875645

संपादक सलाहकार मंडल
डॉ. कुश चतुर्वेदी, इटावा
पूर्व संपादक
श्री दिलीप सिकन्दरपुरिया, लखनऊ
श्रीमती चित्रा दिलीप चतुर्वेदी, भोपाल

संपादक
शशांक चतुर्वेदी
पत्र व्यवहार का पता:
'चतुर्वेदी चंद्रिका', ई-8/जी2/255
गुलमोहर कॉलोनी, भोपाल
(मध्यप्रदेश)
मोबा. 9826086879
ई- मेल :
sampadak.chaturvedichandrika@gmail.com
वेबसाइट : www.chaturvedimahasabha.in

मासिक पत्रिका चतुर्वेदी चंद्रिका में प्रकाशित लेखकों में व्यक्त विचार संबंधित लेखक के हैं। उनसे संपादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निबटारा भोपाल अदालत में किया जायेगा।

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
: Account No. :
1006238340
: IFSC Code :
CBIN0283533
: Branch :
Central Bank of India
Anand Vihar, Delhi

SHREE MATHUR CHATURVED
10292296@cbin
BHIM UPI

पत्रिका पाँच वर्षीय तथा महासभा आजीवन सदस्यता शुल्क
1000 + 501 = 1501/-
महासभा सत्र + पत्रिका
वार्षिक सदस्यता शुल्क-
101+ 251 = 352/-

प्रकाशक : मुनीन्द्रनाथ चतुर्वेदी, श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के लिए स्पेसिफिक ऑफसेट, भोपाल से मुद्रित, संपादक शशांक चतुर्वेदी

सभी सदस्यों को पत्रिका डाक द्वारा भेजी जाती है। पत्रिका न मिलने की दशा में पत्रिका कार्यालय की कोई जवाबदेही नहीं होगी।

अपनों से मन की बात

● डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी
Email : president@chaturvedimahasabha.in

इस वर्ष 15 अगस्त को हम अपनी स्वतंत्रता के 75 वर्ष का कार्यक्रम अमृत महोत्सव के रूप में मना रहे हैं। इस अमृत महोत्सव पर हम अपने समाज के उन बाँधवों को याद कर रहे हैं, जिन्होंने देश सेवा में अपना योगदान दिया है। उनकी देश सेवा पर हम गौरवान्वित हैं। सभी को एक साथ एकत्र कर एक मंच पर लाना संभव नहीं है। पर हम इसका प्रयास कर रहे हैं। उपलब्ध जानकारी के अनुसार हम यथासंभव जानकारी आपके सामने उपलब्ध करा रहे हैं।

स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त के अलावा हमारे सनातन धर्म के अनेक पर्व शिव जी के प्रिय माह सावन में आयोजित किए जाते हैं। सावन के महीने में कजली तीज, हरियाली तीज, नाग पंचमी, रक्षा बंधन का त्यौहार मनाया जाता है। सावन के महीने में इस वर्ष एक अनोखा संयोग भी रहा। सावन के माह में इस वर्ष पुरुषोत्तम मास (अधिक का महीना) भी सम्मिलित था।

सावन पर आती राखी,
बहनों को हर्षाती राखी।
रंग-बिरंगे धागों के संग,
प्रेम को दर्शाती राखी।
पल-पल याद दिलाती राखी,
धागे कच्चे पर प्रेम अटूट है।
पल पल यह समझाती राखी।
भाई के माथे तिलक लगाए,
बहना सुंदर थाल सजाए ।
भाई जताता अपना प्यार,
लाता प्रेम से भरा आशीर्वाद।

विगत माह होलीपुरा ग्राम में गुरु-पूर्णिमा का पर्व बहुत धूमधाम से संपूर्ण विधि-विधान व पूजा-अर्चना के अनुष्ठान के साथ आयोजित किया गया। यह परंपरा वर्षों से सतत रूप से चली आ रही है।

गुरु की महिमा है अगम,
डूबता तैरता शिष्य।
गुरु कल का अनुमान कर
गढ़ता आज भविष्य।।

आशीष की अल्प आयु में दुर्घटना मैं मृत्यु पर मैं संपूर्ण समाज की ओर से उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। साथ ही इस विपदा भरे समय में अध्यक्ष अजय जी के नेतृत्व में ग्वालियर सभा द्वारा किए गए सामाजिक सहयोग पर आभार व्यक्त करता हूँ।

संपादकीय

इस वर्ष 15 अगस्त 2023 हम अपनी स्वतंत्रता के अमृत महोत्सव के रूप में मना रहे हैं। इस अवसर पर हम अपने समाज के दिवंगत योद्धाओं को श्रद्धांजलि दे रहे हैं व वर्तमान योद्धाओं को अपनी सलामी प्रस्तुत कर रहे हैं। चतुर्वेदी समाज में सेना में अपनी सेवाएं देने का बहुत पुराना इतिहास रहा है। चतुर्वेदी समाज अपने आप में बौद्धिक स्तर से परिपूर्ण एवम एक निपुण,निर्भीक योद्धा सिद्ध हुआ है।

इस विषय पर मेजर जनरल श्री नीलेंद्र जी, नोएडा व श्री भरत जी, रिषड़ा से मेरी आरंभिक चर्चा हुई। नीलेन्द्र जी ने इस विषय पर मुझे संपूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। कालांतर में उन्होंने मुझे अक्षरशः आशा से अधिक सहयोग किया। उन्होंने मुझे समय के छोटे से कालखण्ड में सेना में चतुर्वेदी समाज के योगदान की बहुत सारी जानकारियाँ उपलब्ध करा दी। वह समाज के कुछ लोगों के प्रकाशन सामग्री एकत्र करने का बारे में सलाह भी दी। तदोपरांत मैंने यह चर्चा महासभा के सचिव श्री मुनीन्द्र नाथ जी से की। जिस पर उन्होंने सहर्ष सहयोग का मुझे आश्वासन दिया व सहयोग दिया। कम समय में सभापति डॉ. प्रदीप जी के मार्गदर्शन से मैं अपना यह प्रयास आपके सम्मुख प्रस्तुत कर रहा हूँ। आशा है आपको हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमारी योजना निकट भविष्य में आगामी 26 जनवरी के अवसर पर समाज के चतुर्वेदी बाँधवों के सेना में योगदान पर सचित्र संपूर्ण अंक निकालने की है। जिसके बारे में हम आपको शीघ्र सूचित करेंगे। वर्तमान अंक के प्रकाशन में सहयोग हेतु आप सभी का बहुत-बहुत आभार। विगत अंक में हमने समाज के अनेक डॉक्टरों के चित्र प्रकाशित किए थे। हमारे समाज के अनेक डॉक्टर समाज में देश-विदेश में अपनी सेवाएं दे रहे हैं। जिनकी सेवाओं से हम अभिभूत हैं, गौरवान्वित हैं। समय - समय पर इस तरह के प्रकाशन हम भविष्य में भी करते रहेंगे। जिससे हम अपने समाज को अपने समाज की ही प्रतिभाओं से परिचित करा सकें। यह अंक भी हमारा इसी तरह का प्रयास है। सभी को एक साथ एकत्र करके प्रकाशित करना संभव नहीं है। प्रकाशन में पृष्ठों की सीमा होती है। एक सामाजिक संस्था के अंतर्गत कार्य स्व- अनुशासन, सर्वसम्मति व स्वस्थ माहौल में करना उचित होता है। अतः जिन बाँधवों तक हम नहीं पहुँच पाए, उनसे उनके विशाल हृदय में क्षमा की याचना करते हैं व शीघ्र पहुँचने का प्रयास करेंगे।

विभिन्न मंचों पर डॉ. निशीथ चतुर्वेदी (गुरुग्राम), डॉ. शालिनी चतुर्वेदी (गुरुग्राम), व डॉ.अरविंद चतुर्वेदी (लखनऊ) को सम्मानित किए जाने पर बहुत-बहुत बधाई।

इस अंक में संयोजन में सहयोग हेतु श्री दिलीप सिकंदरपुरिया (लखनऊ), श्रीमती रजनी जी (कानपुर), डॉ. नमिता जी (भोपाल) व श्री नीरज पाठक जी (भोपाल) का भी मैं आभार व्यक्त करता हूँ।

प्रिय आशीष की इस अल्पायु में असामयिक स्वर्गवास पर मैं चतुर्वेदी चंद्रिका की समस्त टीम की ओर से अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

- (शशांक चतुर्वेदी)

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
महासभा कार्यकारिणी - 2020-2023

संरक्षक : डॉ. सतीश चतुर्वेदी (नागपुर), श्री भरत चंद्र चतुर्वेदी(भोपाल) (पूर्व सभापति), श्री राजेंद्र आर. चतुर्वेदी, (मुम्बई) (पूर्व सभापति), श्री त्रिभुवन चतुर्वेदी (दिल्ली), श्री कमलेश पाण्डे (नोएडा) (पूर्व सभापति), ले. ज. विष्णुकांत चतुर्वेदी (नोएडा), श्री मदन चतुर्वेदी (कोलकाता), श्री बालकृष्ण चतुर्वेदी (नोएडा)

सभापति : डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी (दिल्ली)

उप सभापति : श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी,(भोपाल), श्री कैलाश चतुर्वेदी (कासगंज), श्री मनोज चतुर्वेदी (बैंगलोर), श्री विनोद चतुर्वेदी (मुम्बई)
मंत्री : श्री मुनींद्र नाथ चतुर्वेदी (नोएडा)
संयुक्त मंत्री : श्री भरत चतुर्वेदी (रिषड़ा), श्री ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी (गाजियाबाद), श्री आशुतोष चतुर्वेदी (कानपुर), श्री अंशुमान चतुर्वेदी (जयपुर)
कोषाध्यक्ष : श्री महेश चतुर्वेदी (दिल्ली)

संपादक,चतुर्वेदी चंद्रिका - श्री शशांक चतुर्वेदी (भोपाल) **ऑडिटर - शिव एसोसिएट,** नई दिल्ली

माननीय कार्यकारिणी सदस्य : श्री दिलीप सिंकदरपुरिया (लखनऊ), श्री ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी (नागपुर), डॉ. कुश चतुर्वेदी (इटावा), श्री शशांक चतुर्वेदी (भोपाल), श्री मनीष चतुर्वेदी (हरदोई), डा. राकेश चतुर्वेदी (मथुरा), डा. राजीव चतुर्वेदी (पुणे), श्री पंकज चतुर्वेदी (मुम्बई), श्री सुशील पाठक (मुम्बई), डॉ. ऋषभ चतुर्वेदी (देहरादून), श्रीमती बीना मिश्रा (हैदराबाद), श्री राकेश चतुर्वेदी(बरेली), श्री करुणेश चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्री अजय चौबे(भोपाल), श्री प्रदीप चतुर्वेदी "लालन" (आगरा), श्री भुवनेश कुमार चौबे(गोंदिया), श्री पुनीत चतुर्वेदी (आगरा), श्री प्रदीप चतुर्वेदी (ग़ाज़ियाबाद), श्री ललित चतुर्वेदी (कोटा), श्री राहुल चतुर्वेदी (मैनपुरी), श्री विशाल चतुर्वेदी (पुरा), श्री गोविंद चतुर्वेदी (जयपुर), श्री गोविंद चतुर्वेदी (इंदौर), श्री ललित चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री अभयराज चतुर्वेदी (गुरुग्राम), श्री विनय चतुर्वेदी (अहमदाबाद), श्री अभिषेक चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्री प्रवेश चतुर्वेदी (कानपुर) श्री नीलकमल चतुर्वेदी (कोलकाता), श्री हेमंत चतुर्वेदी (नासिक), श्री अनिल चतुर्वेदी (प्रयागराज), श्री सुदीप चतुर्वेदी (फिरोजाबाद), श्री सुशील चतुर्वेदी (फ़रीदाबाद), डॉ. मनीष चतुर्वेदी (कोटा), श्री लोकेंद्र नाथ चतुर्वेदी (गाजियाबाद), श्री शिव नारायण चतुर्वेदी (कोटा), श्री विपिन चतुर्वेदी (लखनऊ), श्रीमती पूनम चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री आशीष चतुर्वेदी (आगरा)।

स्थाई आमंत्रित सदस्य : श्री अविनाश चतुर्वेदी (कानपुर), श्री पदम कुमार चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री प्रताप चंद्र चतुर्वेदी (लोनी), श्री सुभाष चतुर्वेदी (मुम्बई), श्री राजेन्द्र प्रसाद चतुर्वेदी "अन्नी" (प्रयागराज), श्री मनमोहन चतुर्वेदी (मैनपुरी), श्री बिपिन पांडेय (गाजियाबाद), श्री कमलेश रावत (कोटा), श्री राहुल चतुर्वेदी (मुम्बई), श्री प्रवीण चतुर्वेदी (हैदराबाद), श्री ईश्वर नाथ चतुर्वेदी (कोलकात्ता), श्री अरुण चतुर्वेदी (जयपुर), श्री अमित चतुर्वेदी (मथुरा), श्री योगेंद्र चतुर्वेदी (ग्वालियर)।

विशेष आमंत्रित सदस्य : श्री नीरज चतुर्वेदी (मैनपुरी), श्री गजेंद्र चौबे (दमोह), श्री दिनकर राव चतुर्वेदी (फरौली), श्री कौशल चतुर्वेदी (दिल्ली), श्री मधुकर पाठक (आगरा), श्री चैतन्य किशोर चतुर्वेदी (फर्रूखाबाद), श्री संजय मिश्रा (कानपुर), श्री अम्बर पाण्डे (भोपाल), श्री अरुण चतुर्वेदी (नागपुर), श्री मुकेश चतुर्वेदी (रिषड़ा), श्री भारत भूषण चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री शशिकांत चतुर्वेदी (आगरा), श्री अरविंद चतुर्वेदी (फिरोजाबाद), श्री महेंद्र चतुर्वेदी (जयपुर), श्री दिलीप चतुर्वेदी (फिरोजाबाद), श्री लेखेंद्र चतुर्वेदी "पुत्तन" (लखनऊ), श्री शशांक गिरीश चौबे (नागपुर), श्री संजय चतुर्वेदी (अहमदाबाद), श्री बसंत रमेश चौबे (भिलाई), श्री नितिन चतुर्वेदी (निम्बाहेड़ा), श्री राजेश चतुर्वेदी, "गुड्डू" (कोलकत्ता), श्री हर्ष मोहन चतुर्वेदी, "मोहित" (आगरा), श्री दिनेश चतुर्वेदी (बाह), श्री मनीष चतुर्वेदी (दिल्ली), श्री मनोज मिश्रा (मैनपुरी), श्री संजय चतुर्वेदी (फरीदाबाद)।

महिला प्रकोष्ठ : श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी (भोपाल) (संयोजक), श्रीमती नीलिमा चतुर्वेदी (कानपुर), श्रीमती विनीता चतुर्वेदी (देहरादून), श्रीमती समता चतुर्वेदी (दौसा), श्रीमती पूनम चतुर्वेदी (लखनऊ), श्रीमती संध्या चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्रीमती अर्चना चतुर्वेदी (जयपुर), श्रीमती दीपाली चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्रीमती रश्मि चतुर्वेदी (नोयडा), श्रीमती अरूणा चतुर्वेदी (कोटा), श्रीमती कीर्ति मिश्रा (हैदराबाद)।

युवा प्रकोष्ठ : डॉ. मनीष चतुर्वेदी (कोटा), (संयोजक), श्री सुधांशु चतुर्वेदी (दिल्ली), श्री रीगल चतुर्वेदी (भिंड), श्री दिवस चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री आशीष चतुर्वेदी (हावड़ा), श्री दुर्गेश चतुर्वेदी (जयपुर) श्री गगन चतुर्वेदी (पुरा), श्री पुलकित चतुर्वेदी (नोएडा), श्री सुनील चतुर्वेदी (जयपुर), श्री सावन चतुर्वेदी (आगरा)।

चिकित्सा प्रकोष्ठ : डॉ. संजय चतुर्वेदी (आगरा), डॉ. अरविंद चतुर्वेदी (दिल्ली), डॉ. निखिल चतुर्वेदी (आगरा)

आई टी प्रकोष्ठ : श्री ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी (गाजियाबाद), श्री प्रसून चतुर्वेदी (भुवनेश्वर)।

पता : 405-406, चिरंजीव टावर, नेहरू प्लेस, नई दिल्ली - 110049

सशस्त्र सेनाओं में चतुर्वेदीयों का योगदान

- ब्रिगेडियर नीलेन्द्र कुमार चतुर्वेदी, नोयडा

चतुर्वेदी चंद्रिका के सम्पादक जी का संदेश मिला कि पत्रिका के आगामी अंक के लिए मेरा योगदान अपेक्षित है। उनके आग्रहपूर्ण आदेश को टाल सकना मेरे लिए सम्भव नहीं है। अतः अपने कार्यक्षेत्र से सम्बन्धित एक विषय पर लिख रहा हूँ। कहीं पढ़ा था कि मथुरा में अपने जाति बान्धव शताब्दियों पहले पाकः शास्त्र, मल्ल युद्ध तथा संगीत विधाओं में उत्कृष्टता प्राप्त कर चुके थे। वीरता तथा साहस के लिए कई प्रसिद्ध वीर बांकुरों के नाम अब भी याद किए जाते हैं। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में कई चतुर्वेदी बान्धवों का सैनिक और असैनिक रूप में असाधारण वीरता प्रदर्शन के लिए उल्लेख मिलता है। अनूपशहर से रावत परिवार के एक पूर्वजन को अंग्रेजी फौज में कार्यरत रहते हुए शौर्य के लिए सम्मानित किया गया था। बाद के वर्षों में वीरता. पराक्रम और एक टूक बात के धनी होने के कारण चतुर्वेदी नवयुवकों का सेना में प्रवेश के लिए आकर्षित होना स्वाभाविक ही था। इस शताब्दी के दूसरे दशक तक अपने समाज के सदस्य प्रशासनिक सेवा में उच्च अधिकारी, इंजीनियर, डाक्टर, जज और वकील के रूप में सफलता प्राप्त कर चुके थे। थल सेना में भी जाति बान्धवों ने पहले सैनिक और बाद में उच्च शिक्षा के अवसर मिलने पर अधिकारी पद पर प्रवेश किया। इस लेख में अफसर के रैंक में कमीशन प्राप्त करके जिन चतुर्वेदी, बान्धवों ने सेना के विभिन्न अंगों में काम किया है, उनका उल्लेख किया गया है। अफसरों के अतिरिक रैंक में भी कुछ चतुर्वेदियों ने प्रशंसनीय सेवा की है, लेकिन उनके विवरण उपलब्ध न होने के कारण लेखक उनके विषय में लिख सकने में असमर्थ है।

द्वितीय विश्वयुद्ध से पूर्व

द्वितीय विश्वयुद्ध से पहले अफसर के रूप में गिने चुनें भारतीयों को ही सेना में अफसर के ओहदे पर भरती करने के लिए चुना गया था। इस अवधि में सम्भवतः सर्व प्रथम नाम कर्नल रतन कुमार मिश्रा का है। फौज में चिकित्सक के रूप में उन्हें रॉयल आर्मी मेडिकल कोर के लिए चुना गया। एरिया हेडक्वाटर पर असिस्टेन्ट डायरेक्टर आफ मेडिकल सर्विसेज का कार्य उन्होंने बखूबी निभाया। अवकाश प्राप्त करने के कई वर्षों बाद मुझे उनसे देहरादून में मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। सरल और शान्त स्वभाव से आतिथ्य प्रेम की उनको याददाश्त अब भी मेरे मानस पटल पर अंकित है। बागवानी से उन्हें विशेष प्रेम था। उन्हीं से प्रेरणा पाकर उनके परिवार के कई सदस्यों ने आगामी वर्षों में सेना में प्रवेश करने का निश्चय किया।

इस श्रृंखला में सबसे पहला नाम कर्नल उमेश मिश्रा का है। 1929 में राज्य छात्रवृत्ति प्राप्त करके उन्होंने ब्रिटेन में एडिनबरा से बेटेनरी विज्ञान में स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण की। उसके कुछ वर्ष बाद

उन्हें 1936 मे फौज की रॉयल बेटेनरी कोर में कमीशन मिला। विभिन्न पदों पर उल्लेखनीय कार्य करने के बाद मेरठ स्थित दि माऊन्ट एन्ड वेटेनरी कोर सेन्टर में कमान्डेन्ट के पद पर उनकी नियुक्ति हुई। द्वितीय विश्व युद्ध में प्रायः नरमा के मोर्चे पर थे तथा वीरता के लिए सम्मानित किये गये। कार्यरत रहते हुए 1967 में उनकी असामायिक मृत्यु हो गयी।

उनके छोटे भाई मेजर रमेश ने एजूकेशन तथा सर्विस कोर में विभिन्न पदों पर कार्य किया। तीसरे नम्बर पर मेजर जनरल सुरेश मिश्रा को ब्रिटेन की सेन्डहर्स्ट अकादमी में प्रशिक्षण के वाद कमीशन मिला। अपने चाचा कर्नल रतन कुमार तथा बड़े भाई कर्नल उमेश के अतिरिक्त वह किंग्स कमीशन प्राप्त अफसरों की श्रेणी में थे। गोरखा रेजीमेन्ट ही नहीं, उन्हें फ्रंटियर फोर्स तथा गढ़वाल रेजीमेन्ट में सेवा के लिए चुना गया। कलकत्ता के फोर्ट विलियम इलाके में वह बंगाल एरिया के जनरल आफीसर कमान्डिंग के पद पर रहे। कई बार उनके साथ भेंट हुई। सदैव उनकी मिलनसारिता तथा विनोद प्रियता का एहसास होता था। सेन्ड हर्स्ट में आपको सर्वोच्च सम्मान 'किंग्स इंडिया केडेट शिप' का मिला था।

मेजर जनरल दिनेश चन्द्र मिश्रा को 1939 में देहरादून की इंडियन मिलिट्री अकादमी के प्रारम्भिक बैच में कमीशन मिला। ज्ञातव्य है, कि फौज के तीनों अंगों में अफसर के पद पर नियुक्ति को कमीशन मिलना कहा जाता है। दिनेश मिश्रा सेना की सुविख्यात राजपूताना रायफल्स से सम्बन्धित थे। द्वितीय विश्व युद्ध में उन्हें वर्मा के मोर्चे पर वीरता के लिए मिलिट्री क्रास प्रदान किया गया। उन्होंने सेना के कई उच्च पदों को सुशोभित किया। उनके छोटे भाई लेफ्टिनेन्ट कर्नल अवधेश मिश्रा को 1941 में पैदल सेना में कमीशन मिला। कुमाऊँ तथा बिहार रेजीमेन्टों में सेवा करते हुए उन्होंने देश, मिश्र तथा यूरोप के विभिन्न देशों में भारतीय फौज के लिए सराहनीय कार्य किया। योग्यता के आधार पर इन्हें रक्षा मंत्रालय के बाहर अन्य विभागों में कार्य के लिए चुना गया। दिल्ली में कई बार मुझे उनसे मिलने का सुअवसर मिला। वह अपने सौम्य स्वभाव तथा मिलनसारिता के लिए प्रसिद्ध थे। उल्लेखनीय है कि द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान मिश्रा परिवार के वह सब भाई सक्रिय सेवा में थे। इसी परिवार के मेजर महेश मिश्रा को कुछ समय तक तो तोप खाना में रहने के बाद उच्च प्रशासनिक पदों के लिए भेजा गया।

द्वितीय महायुद्ध

द्वितीय महायुद्ध के दौरान जिन अन्य जाति बान्धवों ने सक्रिय सेवा में भाग लिया, उनमें फिरोजाबाद के डा. विशम्भर

नाथ चतुर्वेदी, कैप्टन सुरेश प्रसाद (मेडिकल कोर) तथा जयपुर के मेजर सुरेन्द्र नाथ मिश्रा का नाम प्रमुख हैं। सुरेश चंद्र ने अफ्रीका मरूस्थल की लड़ाई में भाग लिया। वह कैप्टन कुमार मंगलम के सहयोगियों में थे, जो बाद में भारतीय थल सेना के जनरल बने। वे दोनों फील्ड मार्शल रोमेल की फौजों द्वारा लीबिया में रखे गए भारतीय युद्ध बन्दियों में थे। वह अपनी विनोदप्रियता के लिए अविस्मरणीय थे। मेजर सुरेन्द्र नाथ मिश्रा पहले जयपुर राज्य की सेना में 'मान गार्ड' के सम्मानित अधिकारी थे। बाद में भारतीय सेना के साथ विलयीकरण होने पर उन्हें लाई माऊन्टबेटन के अंगरक्षक तथा स्टाफ अफसर पद के लिए चुना गया। उनका व्यक्तित्व सम्मोहक था। उसी अवधि में मेजर ललित किशोर (इटावा) ने एजूकेशन कोर में कार्य किया। मेजर जयकिशन (इटावा) लोक सहायक सेना के अधिकारी थे।

प्रसिद्ध पाठक परिवार के कर्नल महानन्द ने थल सेना में 1940 से 1970 तक तीस वर्ष सराहनीय कार्य किया। सप्लाई कोर में कार्यरत रहते हुए द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान मध्यपूर्व में ईराक, मिश्र, फिलिस्टीन तथा अदन में सैनिक सेवा के लिए तैनात किया गया। इस लेख के लिए लेखक को उनसे आवश्यक जानकारी प्राप्त हुई। पाठक परिवार के ही लेप्टिनेन्ट कर्नल लक्ष्मण प्रसाद ने 1942 में कुमाऊँ रेजीमेन्ट में कमीशन प्राप्त कर विभिन्न छावनियों में कार्य किया। लेफ्टिनेन्ट कर्नल अजीत प्रसाद भी फौज के मुस्तैद अफसरों में गिने जाते थे।

1950 से 1970

सेना की आर्डनेन्स कौर में 1950 से 1970 के दशकों में सेवारत दो अधिकारियों के नाम उल्लेखनीय हैं। लेफ्टिनेनट कर्नल पी. सी. चौबे ने बम्बई स्थिल मलाड, कानपुर तथा श्रीनगर के आयुध डिपो में सम्मान पूर्वक कार्य किया। वह जबलपुर स्थित आर्डिनेन्स स्कूल में डिप्टी कमान्डेन्ट भी रहे। इससे पहले वाशिंग्टन में उन्हें भारतीय दूतावास में प्रतिनिधित्व के लिए भेजा गया। उनके समकालीन ले. कर्नल नरेश चन्द्र ने जबलपुर तथा अन्य छावनियों में विभिन्न पदों पर कार्य किया।

अनूपशहर निवासी रावत बन्धुओं ने १९८० दशक के मध्य तक फौज के कई महत्वपूर्ण स्थानों पर बखूबी काम किया। बड़े भाई मेजर जनरल महेन्द्र नाथ ने स्थल सेना की प्रतिष्ठित गोरखा रायफल्स की पहली रेजीमेन्ट में कमीशन प्राप्त किया। अपने सेवाकाल में उन्हें इसी रेजीमेन्ट के कर्नल पद के लिए चुना गया। इसके अतिरिक्त उन्होंने उत्तरी कमान में अखनूर स्थित 10 पैदल सेना डिवीजन की कमान भारत पाक सीमावर्ती इलाके में कुशलता से संभाली। इन्फेन्ट्री स्कूल के कमान्डेन्ट तथा मध्य कमान मुख्यालय के चीफ आफ स्टाफ के पदों पर भी रहे। वह अपने सहयोगियों के सम्मान पात्र थे। उत्कृष्ट सेवा के लिए उन्हें 'परम विशिष्ट सेवा मेडिल' का सर्वोच्च पदक दिया गया।

उनके छोटे भाई ब्रिगेडियर नरेन्द्र नाथ रावत तोपखाना के

मेधावी अफसरों में गिने जाते थे। वह अपनी रणनीति और अदम्य साहस के लिए प्रसिद्ध थे। 1971 के भारत-पाक युद्ध के दौरान उन्हें असाधारण वीरता के लिए 'वीर चक्र' से सम्मानित किया गया। अम्बाला में जोनल रिक्रूटिंग अफसर के पद पर कार्यरत रहते हुए अकाल मृत्यु से उनके सराहनीय कैरियर का अन्त हो गया।

होलीपुरा से फ़ौज में तीन अधिकारियों ने विशिष्ट योगदान किया। इनमें बिगेडियर प्रभास सर्वप्रथम है। वह पैदल सेना की सिख रेजीमेन्ट के योग्य अधिकारियों में थे। सेना मुख्यालय में उन्होंने सेवा सचिव शाखा में प्रशंसनीय कार्य किया। 'विशिष्ट सेवा मेडिल' से सम्मानित किए जाने के बाद उन्होंने जम्मू पैदल सेना की ब्रिगेड की कमान सीमावर्ती क्षेत्र में काब्लियत से एक संभाला। होलीपुरा के अन्य दोनों अफसर तोपखाना से सम्बन्धित थे। ब्रिगेडियर कृष्ण कुमार ने तोपखाना के आर्टिलरी स्कूल देवलाली में प्रशिक्षक रहने के बाद लखनऊ सब एरिया मुख्यालय तथा, आर्मी हेडक्वाटर में विशिष्ट पदों पर कार्य किया। भारत चीन सीमा पर वह आर्टिलरी ब्रिगेड के कमान्डर रहे। फौज में कार्यरत रहते हुए उन्हें सीमा सुरक्षा दल के प्रशिक्षण कालेज में कमान्डेन्ट के कार्य के लिए चुना गया। कर्नल सुधीर ने आर्टिलरी रेजीमेन्ट की कमान के अतिरिक्त मध्य कमान मुख्यालय तथा गोलकुन्डा स्थित तोपखाना सेंटर में उच्च स्थानों पर कुशलता पूर्वक कार्य किया। ब्रिगेडियर उमेश चन्द्र भी तोपखाना में थे। अन्य स्थानों के अतिरिक्त वह लखनऊ के मध्य कमान मुख्यालय में स्टाफ पद पर तथा देवलाली के आर्टिलरी स्कूल में प्रशिक्षक के रूप में भेजे गए।

एक ही परिवार के अनेक भाई

एक ही परिवार से सगे भाईयों द्वारा फ़ौज में देश सेवा करने की परम्परा में मिश्रा बन्धुओं तथा रावत भाइयों की कड़ी को आगे बढ़ाते हुए आगरा से कर्नल आनन्द, अरविन्द तथा सुनन्द ने पैदल सेना की प्रतिष्ठित रेजीमेन्टों में विभिन्न रैंकों पर विशिष्ट सेवा का उदाहरण प्रस्तुत किया। ले. कर्नल आनन्द ने नियमित फौज के अतिरिक्त नेशनल कैडेट कोर में भी उल्लेखनीय कार्य किया। कर्नल अरविन्द वेलिंगटन स्थित सुरक्षा सेना स्टाफ कालेज के स्नातक थे। वह पूर्व में चीन सीमा के पास एक ब्रिगेड मुख्यालय में प्रमुख स्टाफ अधिकारी रहे थे। इसी श्रृंखला में कानपुर के कर्नल चन्द्र शेखर तथा उनके छोटे भाई इन्द्रशेखर ने तोपखाना की रेजीमेन्टों में नाम कमाया। हिमालय की दुर्गम पहाड़ियों पर सियाचीन क्षेत्र में हेलीकाप्टर पर साहसपूर्ण उड़ान के लिए चन्द्रशेखर को 'युद्ध सेवा मेडल' से सम्मानित किया गया। कर्नल इन्द्रशेखर ने एक राकेट रेजीमेन्ट की कमान के बाद मध्य कमान मुख्यालय में उल्लेखनीय कार्य किया। वह सेना सचिव शाखा में दिल्ली में वर्षों तक रहे। सिकन्दराबाद के कालेज आफ डिफेन्स मैनेजमेन्ट के प्रशिक्षक पद पर वह काफी समय कार्यरत रहे।

सन साठ के दशक में कई नवयुवकों ने सेना में केरियर बनाने के लिए कदम उठाया। इनमें कानपुर से इंजीनियर कोर के कर्नल हेमप्रकाश, कोटा से गोरखा रेजीमेन्ट तथा बाद में, प्रार्डनेन्स कोर के ले. कर्नल रविन्द्र मिश्रा, लेफ्टिनेन्ट कर्नल आदित्य नाथ (सिख लाइट इन्फेन्ट्री), लेफ्टिनेन्ट कर्नल प्रहलाद नाथ (जज एडवोकेट जनरल विभाग) और ले. कर्नल पंकज (तोपखाना) के नाम प्रमुख हैं। कर्नल हेमप्रकाश ने कश्मीर और उत्तर पूर्वी क्षेत्रों में सीमा सड़क संगठन में उल्लेखनीय कार्य किया। अपनी असामायिक मृत्यु से पहले वह दिल्ली में इंजीनियर इन चीफ के कार्यालय के योग्य अधिकारियों में गिने जाने थे। रविन्द्र मिश्रा ने आयुध डिपो के अतिरिक्त कोलाबा बम्बई में एरिया हेडक्वाटर पर जिम्मेदारी के पदों पर काम किया। प्रहलाद कई जटिल कोर्ट मार्शलों में जज एडवोकेट के रूप में भूमिका अदा की। कर्नल आदित्य को रेजीमेन्ट तथा स्टाफ कार्यों का प्रचुर अनुभव हैं। ले. कर्नल बृजमोहन फूड इंस्पेक्शन संगठन की विभिन्न प्रयोग शालाओं में रहे। लेप्टिनेन्ट कर्नल त्रिभुवन नाथ और इलाहाबाद के मेजर ज्ञान का नाम भी भुलाया नहीं जा सकता है। तोपखाना से पंकज इम्बारकेशन मुख्यालय में कार्य के लिए चुने गए थे।फिर लखनऊ में कार्यरत रहे।

भारत चीन युद्ध के बाद

भारत चीन युद्ध की पृष्ठभूमि में आपात स्थिति की घोषणा होने पर कई जाति बान्धवों ने इमरजेन्सी कमीशन प्राप्त करके स्थल सेना की विभिन्न रेजीमेन्टों में सेवा करने के बाद असैनिक जीवन में अच्छा नाम कमाया। पैदल सेना में कृपा कान्त जी थे जो बाद में भारतीय पुलिस सेवा में प्रवेश करके उत्तर प्रदेश में पुलिस महानिरीक्षक, सीमा सुरक्षा दल के पूर्व आई. जी. भूपेन्द्र नाथ (तरसोखर), कैप्टेन व्यास (आगरा) तथा कैप्टेन संतोष कुमार जो बाद में बम्बई में महेन्द्रा एन्ड महेन्द्रा कम्पनी में वरिष्ठ प्रबन्धक बने, के नाम शामिल हैं। कैप्टेन आर. एन. चतुर्वेदी (मथुरा) ने तोपखाना के बाद भारतीय प्रशासनिक सेवा में प्रवेश कर के उत्तर प्रदेश तथा अन्य स्थानों पर उच्च पदों पर कार्य किया। मेजर ऊषा मिश्रा ने एन. सी. सी. की पूर्ण कालीन अधिकारी के रूप में विभिन्न स्थानों पर कार्य किया।

इंजीनियर कोर से ब्रिगेडियर आनन्द मोहन तबादले पर सर्वे आफ इन्डिया में गए। उन्होंने पूना, चन्डीगढ़ तथा जयपुर में अपने संगठन में महत्वपूर्ण स्थानों पर कार्य संभाला। लेप्टिनेन्ट कर्नल चैतन्य पाठक भी इंजीनियर कोर में थे। भरतपुर के लेफ्टिनेन्ट कर्नल रमेश चन्द्र का नाम भी उल्लेखनीय है। कर्नल आर. पी. चतुर्वेदी (तोपखाना) के मेधावी अफसरों में गिने जाते। उन्होंने

कनाडा में स्टाफ कालेज कोर्स में प्रशिक्षण लिया था।

भारत पाक युद्ध 1971

भारत पाक युद्ध 1971 दौरान पुरस्कृत अफसरों में लेफ्टिनेन्ट कर्नल भरत पाठक (मैनपुरी) कर नाम उल्लेखनीय है। तोपखाना की ४ फील्ड रेजीमेन्ट में उनकी शौर्यपूर्ण भूमिका के लिए उन्हें 'वीर चक्र' से सम्मानित किया गया। उन्होंने तिथवाल में १९ इन्फेन्ट्री डिवीजन के अन्तर्गत १०४ पैदल सेना ब्रिगेड की ओर से कश्मीर की लड़ाई में बहादुरी दिखाई। बाद में उन्हें जवाबी गोलाबारी तथा लक्ष्य भेद के लिए लौंग गनरी कोर्स के लिए चुना गया। उन्होंने 127 डिवीजनल लोकेटिंग बैटरी की कमान संभाली। कर्नल आर. पी. चतुर्वेदी को भी वीरता के लिए तोपखाने की एक रेजीमेन्ट मे कार्यरत रहते हुए वीरचक्र प्रदान किया गया।

मेडिकल कोर में भी कई अधिकारियों ने काबिले तारीफ काम किया। ग्वालियर के लेफ्टिनेन्ट कर्नल विपिन ने जहाँ एक ओर गायनोकोलोजिस्ट के विशेषज्ञ के रूप में नाम कमाया, तो दूसरी ओर थल सेना में हिन्दी के प्रचार के लिए अद्वितीय काम भी किया। हिन्दी के लोकप्रिय कहानी लेखक के रूप में उनके संग्रह 'कॉफी का एक कप' को उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा सम्मानित किया गया। लखनऊ के ब्रिगेडियर अशोक इस समय जोरहट के

एयर फोर्स अस्पताल के कमान्डेन्ट हैं। पूना के आम्ड फोर्सेज मेडिकल कालेज में उन्हें अध्यापन तथा मुख्यालयों में स्टाफ काम का बहुमूल्य अनुभव है। कर्नल आनन्द को शल्य चिकित्सक के रूप में दक्षिणी ध्रुव पर गंगोत्री केम्प में सराहनीय कार्य के लिए विशिष्ट सेवा पदक' दिया गया था। लेफ्टिनेन्ट कर्नल राजेन्द्र अनुभवी चिकित्सकों में गिने जाते हैं।

सत्तर के दशक में फौज में प्रवेश करने वालों में अखिल (कोटा) को आर्मड कोर से ब्रिगेडियर की रैंक पर पहुँचने वाले पहले जाति बान्धव होने का श्रेय है। वह वख्तर बन्द फौज के उदीयमान अफसरों में हैं तथा अहमदनगर में वरिष्ठ प्रशिक्षक रह चुके हैं। कर्नल आज़ाद कृष्ण और गोपाल ने पैदल सेना की विभिन्न पलटनों में सम्मानपूर्वक काम किया तथा मुख्यालयों में स्टाफ कार्य का भी प्रचुर अनुभव हासिल किया। झाँसी, गंगटोक तथा देहरादून की छाबनियों में गोपाल अब भी मशहूर हैं। तोपखाना से विष्णुकान्त ने देवलाली तथा अहमदाबाद आदि छावनियों में बखूबी काम किया। इस समय वह कर्नल की रैंक पर सेना मुख्यालय में वेपन्स तथा इक्विमेन्ट डायरेक्टरेट में तैनात हैं। इंजनियर कोर के कर्नल अजय इस समय एक रेजीमेन्ट की बाग डोर संभाले हैं। पर्वतारोहण तथा नौका चालन के क्षेत्र में उन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर योगदान किया है। एम. टेक. की परीक्षा में वह उच्च स्थान पर रहे। वृक्षारोपण तथा रंगमंच पर निर्देशक के रूप में वह ख्याति प्राप्त कर चुके है। मेजर निरूपम (लखनऊ) आर्मड कोर के जाने माने अफसर हैं। मैनपुरी के लेफ्टिनेन्ट कर्नल सुयश पाठक इंजीनियरी कोर के हैं। बाढ़ राहत योजना मे साहसिक कार्य के लिए उन्हें 'सेना मेडल' से विभूषित किया गया।

८० के बाद के वर्ष

अस्सी तथा बाद के वर्षों की वरीयता वाले अफसरों में झाँसी के मेजर सुधांशु और देहरादून की सैनिक अकादमी में प्रशिक्षण दल के भूतपूर्व सदस्य मेजर देवव्रत का नाम आता है। मेजर वी. एन. चतुर्वेदी (लखनऊ) एजूकेशन कोर मे अपनी विशिष्ट शिक्षा प्रणाली के लिए प्रसिद्ध हैं। मेजर संदीप (देहरादून) इंजीनियर्स कोर में हैं। ब्रिटेन में प्रशिक्षण के लिए उनका चयन हुआ था। मेजर दीपेन्द्र रावत (आर्टिलरी) विदेश भेजी जाने वाली भारतीय शान्ति सेना के सदस्य थे। मेजर जयदीप मिश्रा (कोटा) आरमर्ड कोर में हैं। अपने पिता कर्नल रविन्द्र मिश्रा के समान उनकी गिनती तेज़ अफसरों में होती है। अन्य उदीयमान अफसरों में गौरव, संजीव तथा दिनकर के नाम प्रमुख हैं।

कविता

जाग उठा है आज देश का वह सोया अभिमान
तरुण वीर देश के, मूर्त वीर देश के
जाग जाग रे,
मातृभूमि पुकारती अस्थ दे कि रक्त
दे वज्र कि शक्ति तू
कीर्ति है खड़ी हुई आरती उतारती,
जाग शंख फूंक रे
शूर यों न चूक रे

वायुसेना

भारतीय वायुसेना में जाति बान्धवों की सूची में शीर्ष स्थान एयर मार्शल एम. एस. चतुर्वेदी का है। वायुसेना की आब्जवर शाखा में कमीशन लेकर वह एयर मार्शल की रैंक पर पहुँचे। उनकी बराबरी की रैंक पर अन्य कोई जाति बान्धव अब तक नहीं पहुँचे हैं। वायुसेना के अतिरिक्त उन्हें असैनिक जीवन में एयर इंडिया तथा इंडियन एयर लाइन्स के प्रबन्धक बोर्ड पर सर्वोच्च पदों का भार सौंपा गया। फिरोजाबाद के विंग कमान्डर योगेश चन्द्र को फ्लाइंग शाखा में १९४९ में कमीशन मिला। वह एक लोकप्रिय तथा काबिल अफसर थे। वह 'लल्ला' के नाम से प्रसिद्ध थे।

एयर वाईस मार्शल के पद पर पहुँचे वालों में अपने समाज के चार नाम हैं। जयपुर के जयकरन नाथ मिश्र ने वायुसेना में इंजीनियर के रूप में प्रवेश किया था। अपने सेवा काल में उन्होंने नम्बर 12 स्क्वाड्रन तथा वाशिंग्टन में भारतीय दूतावास में सहायक, अटैची के रूप में सराहनी कार्य किया। लगभग चौंतीस वर्ष की सेवा के बाद वह डायरेक्टर सिगनल्स के पद से रिटायर

हुए।

मुरारी लाल जी (भरतपुर) ए. वी. एम. की रैंक से डायरेक्टर पे, पेन्शन एन्ड रेगुलेशन्स के पद से लम्बी सेवा के बाद रिटायर हुए। 1954 में कमीशन मिलने के बाद पहले वह वर्षों तक फ्लाइंग शाखा में एक अनुभवी फायटर पायलट के रूप में कार्यरत थे। बाद में उन्हें सेन्ट्रल एयरमेन सलेक्शन बोर्ड के प्रथम प्रेसीडेन्ट का कार्य सौंपा गया। उन्होंने वायुसैनिकों की भरती प्रथम बार राष्ट्रीय स्तर पर बिना किसी आंचलिक आरक्षण के प्रारम्भ की। वह अपनी ईमानदारी, दवंगता तथा स्पष्ट वादिता के लिए प्रसिद्ध थे।

एयर वाइस मार्शल सुरेन्द्र नाथ डायरेक्टर ऍकाउन्ट्स के पद रिटायर हुए। १९५५ में वायुसेना में प्रवेश करने के बाद १९८९ तक उन्होंने पैराशूट जम्प इंस्ट्रक्टर तथा ए.ओ.सी.इन सी. के स्टाफ़ अधिकारी के रूप में कार्य करने के अतिरिक्त शिलांग, नागपुर, बंगलौरल तथा सुव्रतो पार्क (दिल्ली) के कमान मुख्यालयों में विभिन्न पदों निपुणता से कार्य किया।

ए. बी. एम. शिशिर कान्त चतुर्वेदी वायुसेना मुख्यालय में असिस्टेन्ट चीफ आफ एयर स्टाफ (लोजिस्टिक्स) के पद के लिए चुने गए। उन्हें विभिन्न प्रकार के स्टाफ तथा प्रशिक्षण कार्यों का विषद अनुभव है। वह 'अति विशिष्ट सेना मेडल' सेना पुरस्कृत भी किए गए थे।

ग्रुप केप्टन की रैंक तक पहुँचने वालों में एच. एन. चतुर्वेदी मेडिकल ब्राँच के है। वह 'कीर्ति चक्र' तथा वायुसेना मेडिल से सम्मानित किये जा चुके हैं। उन्होंने वायुसेना में एडवेन्चर सेल के लिए सराहनीय कार्य किया। वह स्वयं कुशल पर्वतारोही भी थे। उन्हें इम्पलायमेन्ट के लिए चुना गया। ओ. पी. चतुर्वेदी अकाऊन्टस शाखा के प्रसिद्ध अफसरों में गिने जाते हैं।

होलीपुरा के गौतम नेवीगेशन ब्रांच के लोकप्रिय अधिकारियों में थे। वह स्टाफ कालेज के ग्रेजुएट तथा अनुभवी नेवीगेशन प्रशिक्षक थे। इस समय वह बेगम पेट वायुसेना स्टेशन के स्टेशन कमांडर रहे।

कविता

हममें चपला सी चंचलता,
हममें मेघों का गर्जन है,
हममें पूर्ण चन्द्रमा चुम्बी,
सिन्धु तरंगों का नर्तन है
सागर से गम्भीर बन हम,
पवन समान मचलना सीखें,
अब तक सुमनों पर चलते थे,
अब कांटों पर चलना सीखें।।

लखनऊ के ग्रुप कैप्टेन अशोक लेखक के छोटे भाई हैं। वह एयर ट्रैफिक कन्ट्रोल विभाग के कई उल्लेखनीय पदों पर रह चुके हैं। यह उत्तरी क्षेत्र नियंत्रण केन्द्र के तीन वर्ष तक कमान्डिंग अफसर रहे। वह इस समय सेन्ट्रल एयरमैन सलेक्शन बोर्ड के प्रेसीडेन्ट के पद पर हैं। स्क्वाश के खिलाड़ी हैं और बहुत लोकप्रिय हैं। कीर्ति शेखर इंजीनियर है और 'विशिष्ट सेवा मेडल' से सम्मानित किए गए थे। उन्होंने जोधपुर, कानपुर तथा ओझर में उल्लेखनीय कार्य किए। ग्रुपकप्टेन मनमोहन इंजीनियरिंग ब्रांच में है।

वायुसेना में विंग कमान्डर की रैंक पर कई जाति बान्धवों ने शानदार प्रदर्शन किया। सिद्ध नाथ एजूकेशन ब्रांच के अनुभवी अफसर के रूप में प्रसिद्ध थे। सर्वेश चन्द्र ने अकाऊन्टस ब्रांच में रहते हुए वायुसेना में विशिष्ट कार्यों के अतिरिक्त समाज सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किए। लखनऊ के अशोक मिश्र फ्लाइग शाखा के काविल और लोकप्रिय अफसरों में गिने जाते थे। सुरेश ने भारी विमान वाहक ए. एन 12 विमान की उड़ान में दक्षता प्राप्त करके कई बार विदेश यात्रा के लिए चुने जाने का श्रेय हासिल किया। 11 साल पहले इन्हे एअर इन्डिया में चुन लिया गया और अब वह एअर इन्डिया में सीनियर कैप्टैन है। एअर बस 310 के कमान्डर हैं। आई. एल. 76 विमान सेवियत रूस से लाने वाली प्रथम टोली में गौतम तथा भावेश शामिल थे। विंग कमान्डरों की सूची में अन्य उल्लेखनीय नाम के. एन. चौबे, आर. एन. चतुर्वेदी (गोगी), विनोद (मौसम विभाग) तथा अजीत (प्रशासन विभाग) के हैं। मौसम का सटीक अनुमान लगाने के लिए पूना तथा आगरा में विनोद जी का नाम अब तक सम्मान से लिया जाता है।

लखनऊ के अनिरूद्ध कुमार एक निर्भीक और लोकप्रिय अधिकारी के अतिरिक्त वायुसेना में विशुद्ध शाकाहार का प्रचार करने के लिए प्रसिद्ध थे। विवेक पाठक (दिल्ली) ने वायुसेना मुख्यालय में एयर स्टाफ इस्पेक्शन के जटिल कार्य पर दस वर्ष तक रखे जाने वाले सम्भवतः वह अकेले अफसर है। सुमन्त मौसम विभाग से है। वह अपने कोर्स में सर्वप्रथम स्थान पर उत्तीर्ण हुए। रविन्द्र इंजीनियरिंग शाखा से हैं। डाक्टर रवीन्द्र विंग कमान्डर हैं और एनेस्थेसिस्ट है। सुनील मेडिकल ब्राँच से है और इस समय गोरखपुर के एअर फोर्स अस्पताल में चिकित्सक हैं।

विंग कमान्डर भावेश प्रशिक्षित फ्लाइंग इंस्ट्रक्टर और मालवाहक विमानों की उड़ान में पारंगत थे। कई बार उन्हें विदेशों में उड़ान के लिए विशेष रूप से चुना गया। यह भारी वाहक ए 76 के आरम्भिक पायलटों में से थे। राकेश (फिरोजाबाद) प्रशासन विभाग में है।

अनल चतुर्वेदी स्क्वाड्रन लीडर बैंक के एक उदीयमान अफसर थे। वह कम समय में ही प्रशिक्षित फ्लाइंग इन्ट्रक्टर तथा वी ग्रीन पायलेट के रूप में अपनी प्रतिभा का परिचय ये चुके थे।

दुर्भाग्यवश एक विमान दुर्घटना में उड़ान करते समय उनकी मृत्यु हो गयी।

स्क्वाड्रन लीडर पी. सी. चतुर्वेदी (सलोन) वायुसेनाध्यक्ष के स्टाफ अफसर के रूप में सराहनीय अफसर माने जाते थे। स्क्वाइन लीडर आरती डाक्टर हैं और रेडियोलोजी के क्षेत्र में विशेषज्ञ है। अरूण प्रशासनिक शाखा में हैं। निशान्त और गंगाराम दोनों एजुकेशन ब्रांच के अधिकारी हैं। सत्य प्रकाश इंजीनियर है तथा स्टाफ कालेज का कोर्स भी कर चुके है। एस. पी. चतुर्वेदी डाक्टर है तथा लक्ष्मी कान्त इंजीनियरिंग से हैं।

विवेक (उरई) को वायुसेना के विभिन्न स्टेशनों और विशेषकर जोधपुर में उड़ान में दक्षता के लिए 'बायुसेना' मेडिल से सम्मानित किया गया।

आशुतोष चतुर्वेदी एक दबंग अधिकारी है। एअर फोर्स स्टेशन कानपुर में सुरक्षा अधिकारी के रूप में उनका दबदबा माना जाता है। वर्तमान में भोपाल में निवासित है। देवेन्द्र (हैदराबाद) ने जन सम्पर्क के क्षेत्र में बहुत काम किया।

फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट विनायक होनहार पायलट हैं। उदय पाठक नेवीगेशन ब्रांच में थे, लेकिन कुछ ही वर्षों बाद यह व्यवसायिक उड़ान के क्षेत्र में चले गए। सौमित्र मौसम विभाग के एक उदीयमान अफसर है। फिरोजाबाद के क्वाइन नीडर (डाक्टर) राकेश मेडिकल ब्रांच में है। फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट फणीश, सुशील (दिल्ली) तथा नीरज साहसी पायलटों में गिने जाते हैं। विजय, योगेश तथा राजेन्द्र इंजीनियरिंग शाखा से हैं। मोहित नए पायलटों में एक हैं। वायुसेना में एक महिला अधिकारी को कुछ समय पहले कमीशन मिलने का समाचार मिला है।

मंगलगान सुनाता सागर,
गीत दिशायें गाती हैं।
चरणों में सागर लहराता
मलय पवन जिसका गुण गाता हैं।
वही सपूत भेंट में,
जो हर खुशी चढ़ा सके
है आदमी वो आदमी,
जो आज सिर कटा सके
है जिन्दगी, दो जिन्दगी
वतन के काम आ सके
नाच नाच युद्ध में
झूम झूम ताल दो

जल सेना

अपनी महत्वपूर्ण भूमिका के बावजूद भारतीय जल सेना सशस्त्र सेवाओं के तीनों अंगों में आकार में सबसे छोटी भले हो, उसकी वर्दी सबसे आकर्षक है। जलसेना में स्वतन्त्रता पूर्व की अवधि में फिरोजाबाद के वी. एन. तथा भूपेन्द्र नाथ जी ने रायल इंडियन नेवी में लेफ्टिनेन्ट के पदों पर काम किया।

जलसेना में सबसे ऊँची रैंक पर पहुँचने का श्रेय कमोडोर विजय चतुर्वेदी को हैं। १९६८ में कमीशन प्राप्त करने के बाद वह भारतीय जलसेना के हास्पिटलशिप अश्वनी के प्रोजेक्ट डायरेक्टर के रूप मे आधुनिकीकरण का काम पूरा करने के बाद सेवा निवृत्त हुए। इससे पहले उनको नेवीगेशन के लिए चुना गया। जलसेना के पश्चिमी बेड़े के फ्लीट नेवीगेटर तथा न.22 विध्वंसक स्क्वाड्रन में उन्होंने प्रशंसनीय कार्य किया। भारत पाक युद्ध के दौरान वह कराची पर हमला करने वाली जलसेवा की टुकड़ी के सदस्य थे। प्रसिद्ध ब्रास टेक्स नामक प्रशिक्षण में भी उन्हें उल्लेखनीय कार्य सौंपा गया।

कमान्डर की रैंक में कम्पिल के नरेश चन्द्र मिश्र ने एक्जीक्यूटिव शाखा में गनरी अफसर के रूप में कार्य किया। उन्हें कोचीन की अकादमी में गनरी कोर्स में स्वर्ण पदक प्रदान किया गया था। वह ब्रिट्रेन की रानी एलिजावेथ के कोरोनेशन के लिए भेजे गए। भारतीय फौज के दस्ते के सदस्य थे। उन्होंने गोवा की मुक्ति के लिए सैनिक कार्यवाही में भाग लिया। वह अपने साहसी व निर्भीक स्वभाव तथा हिन्दी प्रेम के लिए विख्यात थे।

यू. सी. चतुर्वेदी सप्लाइ और सेक्रेटेरियट शाखा के अनुभवी अफसर थे। पनडुब्बियों के युद्ध में एम. एन. चतुर्वेदी ने सुशिक्षित प्रशिक्षण के वाद पर्याप्त पटुता हासिल कर ली थी। वह हाल में ही सक्रिय सेवा से अवकाश ग्रहण कर चुके हैं। जयपुर के लेफ्टिनेन्ट कमान्डर अरविन्द मिश्रा लोकप्रिय और दबंग अफसर थे। स्क्वाश के चोटी के खिलाड़ी भी।

जलसेना में इस समय कमान्डर अशोक तथा आनन्द (आगरा) एजूकेशन शाखा में हैं। पनडुब्बी युद्ध प्रणाली में विशेष योग्यता के लिए सम्मानित लेफ्टिनेन्ट कमॉन्डर मुकुल उज्वल भविष्य वाले उदीयमान अफसर हैं। भरतपुर के लेफ्टिनेन्ट विवेक ने कुछ वर्षों के कार्यकाल में कर्नाटक के राज्यपाल के अंगरक्षक के रूप में कार्य करने के बाद अवकाश ग्रहण कर लिया है। हाल में ही केप्टन व्यास की पुत्री तनूजा को जलसेना में कमीशन मिलने का पता चला है। यह सूची निःसन्देह पूरी नहीं है। जानकारी के अभाव में विभिन्न रैंक पर उल्लेखनीय सेवा करने वाले कुछ जाति बान्धवों के नाम सम्भवतः सम्मिलित नहीं हो सके हैं। जिन अधिकारियों के नाम शामिल किए गए हैं। शायद उनकी भी कुछ उल्लेखनीय तथा विशिष्ट उपलब्धियाँ लिखी नहीं गयी है। इस विषय में बान्छित विवरण मिलने पर इस लेख की उपादेयता और अधिक बढ़ सकती है।

'एतहाद' इत्तफाक 'इन्क्लाब'

आजाद हिन्द फौज में सरदारे जंग- 'शेरेहिन्द

- श्री लक्ष्मण स्वरुप तिलकिया

श्री लक्ष्मण स्वरुप के पिता का नाम श्री घनश्यामदासजी था। श्री घनश्यामदासजी फर्रुखाबाद नगरपालिका में सेक्रेटरी थे। अतः श्री लक्ष्मण स्वरुप प्रारम्भिक शिक्षा फर्रुखाबाद में ही हुई। बाद में उन्होनें आगरा में शिक्षा पाई तथा एम.ए., ए.एल.बी. किया।

अपने पिता की मृत्यु के उपरान्त आप भी फर्रुखाबाद नगरपालिका में नियुक्त हुये, परन्तु आपका वहां मन नही लगा। अतः नौकरी छोड़कर फौज में लेफ्टीनेन्ट हो गये। सन 1940 द्वितीय विश्व युद्ध के समय उनकी रेजीमेन्ट को जापानी सैनिको का सामना करने के लिए वर्मा भेजा गया। परन्तु अंग्रेजी सेना को पराजय का मुंह देखना पड़ा। कर्नल हन्ट के नेतृत्व समपर्ण किया गया। मिश्र जी को भी अनिच्छा पूर्वक युद्ध वन्दी बनना पड़ा। आप डोगरा रेजीमेन्ट में आवंरित थे। द्वितीय महायुद्ध में आप कर्नल के पद पर थे तथा लड़ाई में भेजें गये। आपके हृदय में देशभक्ति के अंकुर फुटे तथा अंग्रेजों की ओर से लड़ना उचित न समझा। अतः भाग कर किसी प्रकार नेता सुभाषचन्द्र बोस के झंडे के नीचे आ गये। देश की स्वतंत्रता के लिए नेता जी के साथ रहने तथा जूझने का संकल्प ले लिया। आपका नेता जी के साथ बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध एव अत्यन्त निकट का संपर्क हो गया था। नेताजी उन्हें शेर हिन्द कहते थे। मेजर मिश्रा अत्यन्त साहसी सूझबूझ वाले सूरमा थे। उन्हें बहादुर दल आत्मघाती दस्ते के लिए चुना गया। यह दल गुप्त सूचनाएं भी एकत्रित करता था। समाचार पत्रों, लाउड स्पीकरों इत्यादि द्वारा ब्रिटिश सेना के हिन्दुस्तानी सैनिकों में स्वदेश की स्वतंत्रता का प्रचार करते थे। 4 फरवरी 1944 को इस दस्ते को आराकान मोर्चे पर मेजर मिश्र के नेतृत्व में भेजा गया। इस दस्ते ने ब्रिटीश सेना ने सातवी डिवीजन में लोहा लिया जो आधुनिक अस्त्रशस्त्रों से लैस था, परन्तु सातवी डिवीजन के व्यक्ति तो मारे गये या बुद्ध वन्दी बनाए गए इस दल का एक भी सैनिक नही मारा गया। शासन ने आपके खिलाफ़ वारन्ट निकाला तथा जिंदा या मुर्दा पकड़ लाने पर इनाम घोषित किया था परन्तु उनको पकड़ा न जा सका। जापानियों को विश्वास हो गया कि आजाद हिन्द फौज वाले देश की स्वतन्त्रता के लिए लड़ने वाले सच्चे सेनानी है और जापानियों से कम नही। नेता जी ने सन्देश भेजकर सिपाहियों एवम अधिकारीयों का अभिनन्दन किया।

एक सार्वजनिक समारोह में नेता जी ने वीर योद्धा श्री मिश्र को मेजर से कर्नल बनाकर सरदार-ए-जंग की उपाधि से विभूषित किया। कर्नल मिश्र की अराकान और जिन पहाड़ क्षेत्र की विजयों से अंग्रेजी सेना के हौसले पस्त हो गये और आजाद हिन्द फौज का मनोवल चौगुना बढ़ गया। हर एक लड़ाई में अँग्रेजों को खदेड़ते हुए स्वतन्त्रता सेनानी भारतभूमि पर पहुँचे अँग्रेजों और कोहिमा में अपना झण्डा गाड़ दिया, परन्तु भाग्य ने पलटा खाया जर्मनी के आत्मसमपर्ण, जापानी जनरल की भूल और असमायिक भयंकर वर्षा के कारण स्वतंत्रता सैनानियों को लौटना पड़ा। नेताजी उस समय रंगून में थे। वहाँ से उन्हें वैंकाक पहुँचना वहुत आवश्यक था। अँग्रेजी और अमरीकी सेना जल, थल और आकाश पर वर्चस्व कायम करके रंगून पर पुनः अधिकार प्राप्त करने के लिए बड़ी थी। रंगून पग मार्ग को छोड़कर रंगून से बाहर जाने का सारे मार्ग बन्द हो चुके थे। इस मार्ग को तब तक खुला रखना जरुरी था जब तक नेताजी रंगून से सुरक्षित चले न जाते। कर्नल मिश्र ने इस मार्ग को खुला रखने का जिम्मेदारी स्वयं ली।

नेताजी मुश्किल से कुछ मील गये होंगे कि अँग्रेजी सेना रंगून-पंगू मार्ग पर आ धमकी। कर्नल मिश्र ने ब्रिटिश सेना की हिन्दुस्तानी अफसर से नेताजी को जाने देने का अनुरोध किया, परन्तु वह नेताजी को जिन्दा या मुर्दा उँचा उठाना चाहता था। दोनों ओर गोलियां चलने लगी। भयंकर युद्ध होने लगा I कर्नल मिश्र के एक एक जवान कट कट कर गिरने लगे। परंतु मोर्चा नही छोड़ा। अतः में जब नेताजी के सुरक्षित निकल जाने का संदेश आया। तब बुरी तरह घायल कर्नल मिश्र ने अन्तिम सांस ली उनके चेहरे पर कर्तव्य निभाने का संतोष था। मरते समय उनके मुख से दो शब्द निकले नेताजी और जय हिन्द। यह घटना अप्रैल १९४५ की है। अपने देश अपने नेता, अपने आदर्श और अपने वचन के लिए आत्मबलिदान करने वाले कर्नल मिश्र को आज कौन याद करता है। बहुत से लोग उनका नाम तक नहीं जानते।

उनकी मृत्यु के विषय में यह भी सुना था कि- (1) उनकी मृत्यु नेताजी के साथ ही हुई थी क्योंकि वे उस समय उन्हीं के साथ हवाई जहाज में थे। (२) देश स्वतंत्र होने के बाद वे वर्मा में प्रकट हो गये थे, परन्तु शासन के राजनैतिक अपराधी कहे जाने के कारण इनको मुकदमे के लिए दिल्ली के लाल किले में लाया जा रहा था कि मार्ग में ही जहाज डुबा दिया गया।

जो भी आपकी मृत्यु की सही जानकारी वर्षो तक नही हो पाई थी तथापि यह निश्चित हो चुका है कि वे जीवित तो नही है। वे मैनपुरी के तिलकिया परिवार के थे। अपने परिवार में वे मधु भैया के नाम से जाने जाते थे। इस परिवार में मैंनपुरी में सर्वश्री सुशील कुमार एंव विनयकुमार है।

कैप्टन भरतचंद्र पाठक वीर चक्र से सम्मान

- **नीरज पाठक**, भोपाल

श्री सालिगराम जी पाठक परिवार के वीरों की इस श्रृंखला में उनके तृतीय पुत्र श्री हरीश चंद्र पाठक के तृतीय पुत्र श्री भरत चंद्र पाठक (वीर चक्र) का नाम सदा याद किया जायेगा। श्री भरत चंद पाठक ने भारतीय थल सेना में सन 1968 में कमीशंड अफसर के रूप में तोपखाना विभाग में पदस्थापना पाई।

दिसम्बर 1971 के भारत–पाक युद्ध को कौन भूल पाया है जिसमें भारतीय सेना ने पूर्वी सेक्टर में पकिस्तान के 1 लाख सैनिकों का आत्मसमर्पण कराया था। पश्चिमी सेक्टर में कश्मीर होने के कारण पाकिस्तान ने अपनी सेना तैनात कर रखी थी और घोर संग्राम मुख्य छिड़ा हुआ था। इसी पश्चिमी सेक्टर में कैप्टन भरत चंद्र पाठक की तैनाती कश्मीर के उत्तर–पश्चिम में स्थित तिथवाल वैली (घाटी) क्षेत्र में हुई थी।

कैप्टन भरत चंद्र पाठक को इस युद्ध के दौरान तीन बार आक्रमण के लिये आदेशित किया गया।

दिनाँक 3 दिसम्बर 1971 की रात को युद्धारम्भ के साथ ही पहले आक्रमण का आदेश मिला। इस आक्रमण में कैप्टन भरत चंद्र पाठक ने पाकिस्तान की सेना के लगभग 30 सिपाहियों को पीछे हटने को मजबूर किया तथा उनके गोला बारूद समेत चौकी पर कब्जा किया। अगले आदेश तक चौकी को कब्जे में रखा तथा अपनी पैदल सेना को आगे बढ़ने को 'कवरिंग फायर' दिया।

पुनः दिनाँक 14 दिसम्बर 1971 की रात को पुनः कैप्टन भरत चंद्र पाठक को एक विशेष अभियान के लिये चुना गया। यहाँ एक कमांडो टास्क (छापामार युद्ध) था। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि कैप्टन भरत चंद्र पाठक को छापामार युद्ध का प्रशिक्षण भी प्राप्त नहीं था। किन्तु उनको उनकी सूझ–बूझ एवं युद्ध कौशल के मद्देनजर इस कार्य के लिये पुनः चुना गया।

यह इलाका पाकिस्तानी सेना से तीन ओर से घिरा था। चूँकि बर्फीले पहाड़ी इलाकों में दिन के समय भू- स्खलन की संभावनायें अधिक होती हैं। आक्रमण रात्रि में ही करना था। दुश्मन की तोपों को जो उन्हीं के इलाके में एक पहाड़ी पर तैनात थी, को नष्ट करना था। पहाड़ी पर आक्रमण करने के लिये जिस मार्ग का चुनाव किया गया था (सामरिक दृष्टि से) वह 60–65 अंश की खड़ी चढ़ाई थी। इसी मार्ग से 11–12 कि.मी. पैदल मार्च करते हुये जाना था तथा उसी रात में वापस भी आना था। कैप्टन भरत चंद्र पाठक ने उपरोक्त छापामार युद्ध को सफलतापूर्वक अंजाम तक पहुंचाया। दुश्मन की सभी आग उगलती तोपों को निष्क्रिय किया तथा अपनी टुकड़ी के साथ वापस अपने मुकाम पर आ डटे। इससे पैदल सेना को शीघ्र आगे बढ़ने का मौका मिला।

ततपश्चात दिनाँक 17 दिसम्बर 1971 को एक बार फिर आक्रमण आदेशित हुआ, किन्तु युद्ध विराम के वातावरण के कारण अन्तिम क्षणों में आदेश वापस हुआ। कैप्टन भरत चंद्र पाठक के इन वीरतापूर्ण कार्यों के लिये भारत के महामहिम राष्ट्रपति श्री वी. वी. गिरि ने वीर चक्र देकर सम्मानित किया। कैप्टन भरत चंद्र पाठक, चतुर्वेदी समाज के प्रथम वीर चक्र विजेता हुये।

सेना की नौकरी से जून 2001 में लेफ्टिनेंट कर्नल के रूप में सेवानिवृत्ति पर तुरंत उन्हें जेट एयरवेज से सुरक्षा अधिकारी के पद का प्रस्ताव मिला जिसे उन्होने स्वीकार किया। जेट एयरवेज से जून 2009 में अवकाश लेकर दिल्ली में स्थाई जीवन जी रहे हैं।

थल सेना में मान - समाज का सम्मान
- ले. जन. विष्णु कांत चतुर्वेदी पीवीएसएम एवीएसएम एसएम

- **मुनीन्द्र नाथ चतुर्वेदी**, नोएडा (मंत्री, महासभा)

चतुर्वेदी चंद्रिका के स्वाधीनता दिवस के अमृत महोत्सव के अवसर पर प्रकाशन के मेरे लिए इससे ज्यादा महत्वपूर्ण और कोई विषय नहीं हो सकता था। आज से लगभग 5 वर्ष पूर्व, 2018 में अपने जीवन के निराशा के आग़ोश में था और आगे जीवन की आस भी छोड़ चुका था। मेरा कार्यक्षेत्र केवल बिस्तर और सहारे से बाथरूम तक जाना रह गया था।

कमजोरी प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही थी। उन दिनों जनरल विष्णु कांत जी तथा जज साहब गोपाल जी दोनों मेरे पड़ोस में रहते थे और आकर आग्रह करते थे कि बाहर ड्राइंग रूम में आकर बैठो। इस प्रेरणादायक वार्तालाप से मेरे जीवन में एक नई ऊर्जा का संचार हुआ तथा जीवन जीने की लालसा भलीभूत हो गई। प्रतिदिन मेरे अनन्य मित्र डॉ. निशीथ की के परामस्रदायी आग्रह ने भी उत्साहवर्धन का काम किया। उपरोक्त सभी के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ। विष्णु कांत के लिए कुछ शब्द अपनी और से लिख रहा हूँ।

श्री विष्णु कांत जी का जन्म 13 अक्टूबर 1951 को श्री गोपीनाथ जी एवं माया देवी के द्वितीय पुत्र के रूप में हाथरस में हुआ। आप मूल रूप से चंदवार के रहने वाले हैं। आप का पैतृक निवास स्थान फतेहगढ़, फर्रुखाबाद में है। आपने स्कूल की पढ़ाई सैनिक स्कूल लखनऊ से की तथा 16 वर्ष की आयु में 1967 में नेशनल डिफेंस एकेडमी में अखिल भारतीय चयन प्रतियोगिता के माध्यम से चयनित हुए। 1971 में इंडियन मिलिट्री एकेडमी देहरादून से अंतिम वर्ष की प्रशिक्षण के उपरांत advance course के मध्य में आपको दिसंबर 1971 में बांग्लादेश के स्वाधीनता संग्राम में, पाकिस्तान फौज की नृशंस हत्याओं से स्थानीय निवासियों को बचाने के लिए पूरी पाकिस्तान में सिलहट क्षेत्र में भेजा गया। मात्र 21 वर्ष की उम्र में अपने अदम्य नेतृत्व तथा अति विपरीत परिस्थितियों में शौर्य प्रदर्शन के लिए आपको सेना मेडल (वीरता) से सम्मानित किया गया। अभी कुछ भी समय पूर्व ही, बांग्लादेश की प्रधानमंत्री श्रीमती शेख हसीना द्वारा विशेष रूप से ढाका आमंत्रित कर आपको सम्मानित किया गया।

आप १९९१ से १९९४ तक व 99 में फील्ड रेजीमेंट के कमांडेंट रहे। 2000– 2001 में 14 – आर्टलरी ब्रिगेड के कमांडर नियुक्त किए गए। 2003 में आपने नेशनल डिफेंस कॉलेज से एक अति विशिष्ट तथा सम्मानीय नेतृत्व का प्रशिक्षण प्राप्त किया। आर्मी के द्वारा आयोजित लगभग सभी प्रशिक्षण प्राप्त किए। जिसमें सीनियर कमांडेंट कोर्स भी है। आपकी नियुक्ति अगस्त 2007 में आर्टलरी स्कूल में डिप्टी कमांडेंट तथा मुख्य प्रशिक्षणकर्ता के पद पर हुई।

आपको 26 जनवरी 2007 को तत्कालीन राष्ट्रपति श्री एपीजे अब्दुल कलाम द्वारा अति विशिष्ट सेवा मेडल (AVSM) तथा 26 जनवरी 2011 को राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिल द्वारा परम विशिष्ट सेना मेडल (PVSM) से सम्मानित किया गया।

लेफ्टिनेंट जनरल विष्णु कांत जी का थल सेना में डिप्टी जनरल मैन पॉवर प्लैनिंग एंड पर्सनल सर्विसेज अर्थात थल सेना के पूरे १३ लाख का हेड ऑफ़ एडमिनिस्ट्रेशन से सेवानिवृत्त हुए। आप के सेवा काल में थल सेना को ६ वे pay commission का प्रारूप बनवाया।

इसके बाद 2 वर्ष आप स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के संपूर्ण भारत के एडवाइजर के पद पर भी रहे हैं। अपनी सेवा काल में आपने दक्षिण अफ्रीका, इजरायल, फ्रांस, अमेरिका आईलैंड, ऑस्ट्रेलिया, ऑसट्रिया, पोलैंड, रूस, चेक गणराज्य ब्रूनेई, भूटान तथा नेपाल की यात्राएं भी की।

वर्तमान में आप भारतीय भूतपूर्व सैनिक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं। राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर की सुरक्षा के विषयों पर आपके विचार वह चर्चा टीवी व अखबारों में अधिकतर दिखाई व सुनाई पड़ते हैं। आपका विवाह श्रीमती मृदुला सुपुत्री डॉ. प्रेम प्रकाश जी, भूतपूर्व प्रोफेसर सेंट जॉन्स कॉलेज आगरा से हुई थी। आपकी दो पुत्री सौ. शुभ्रा (MCA) व सौ. शिल्पी (बी.ए.,एलएलबी) व पुत्र चि.तरुण (बी.टेक एवं MBA), अपने क्षेत्रों में ख्याति अर्जित कर रहे हैं।

सितंबर 2017 मैं मैनपुरी में आयोजित श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के राष्ट्रीय अधिवेशन में श्री विष्णुकांत जी को महासभा का राष्ट्रीय संरक्षक के पद का दायित्व दिया गया, जो आज तक अपना मार्गदर्शन दे रहे हैं। इसी क्रम में आपने माथुर चतुर्वेदी समाज की नोएडा शाखा सभा की स्थापना भी की। तत्पश्चात आपने नोएडा में 18 अगस्त 2018 तथा 2 फरवरी 2020 को महासभा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठकों का भी आयोजन किया। श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के लेफ्टिनेंट जनरल पद तक पहुंचने पर हम गौरवान्वित अनुभव करते हैं तथा आप की दीर्घायु की कामना करते हैं।

जय हिंद

लेफ्टिनेंट जनरल विष्णुकान्त चतुर्वेदी

(ए.वी.एस.एम और पी.वी.एस.एम. से सम्मानित)

- मेजर सौरभ चतुर्वेदी

जनरल विष्णुकान्त चतुर्वेदी अपने समाज के अग्रणी पथ प्रदर्शकों में से हैं। जिन्होंने आगे आने वाली पीढ़ियों को भी भारतीय सेना में भर्ती होने के लिए प्रेरणा दी। जनरल विष्णुकान्त चतुर्वेदी भारतीय सेना में 1971 जून के निर्णायक साल में भर्ती हुए। वे भारतीय सेना की सर्वोत्तम फौजी रेजिमेन्ट 99 फील्ड रेजिमेन्ट तोपखाना रेजिमेन्ट में भर्ती हुए और तुरन्त ही उन्हें 1971 के युद्ध में भाग लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उस समय रेजीमेन्ट North East में थी और जनरल साहब उस समय 2 Lt. को 415 GR के साथ आर्टी OP का दायित्व मिला। यह पहला मौका था जब भारतीय सेना की किसी यूनिट को दुश्मन के इलाके में हैलिकॉप्टर द्वारा प्रविष्ट करवाया गया। 2 Lt. विष्णुकान्त चतुर्वेदी ने 1971 के युद्ध में बाँगलादेश के प्रमुख शहर 'सिल्हट' की आजादी में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

जनरल विष्णुकान्त चतुर्वेदी को इस साहसी कार्य के लिए सेना मैडल वीरता से पुरस्कृत किया गया और रेजिमेन्ट को 'सिल्हट के रणबांकुरे के नाम से अलंकृत किया गया।

जनरल विष्णु कांत ने अपने लंबे सैनिक कार्यकाल में अपनी ही रेजिमेंट की कमान एक संवेदनशील व गीत की कमान समानी तथा भारत के हर कोने में तैनात रहे हैं। विष्णु कांत जी पदोन्नति पाते रहे और अंत में उन्हें भारतीय सेना के डायरेक्टर जनरल मेन पावर प्लैनिंग एंड पर्सनल सर्विसेज की जिम्मेदारी सौंपी गई।

जनरल साहब का कार्यकाल अत्यन्त चुनौतीपूर्ण था। उनके कार्यकाल की अनेका–अनेक उपलब्धियों में से सर्वोपरि है– 6th Pay Commission का पारित होना। Restructuring of officers cadre तथा ज्ञानदीप। भारतीय सेना तथा सरकार ने इनके सराहनीय कार्य के लिए इन्हें अतिविशिष्ट सेना मेडल (AVSM) से अलंकृत किया व सर्वोत्तम सेवा के लिए परम विशिष्ट सेवा मेडल (PVSM) से भी राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित किया गया।

जनरल वी.के. चतुर्वेदी ने अपने जीवन में सहिष्णुता, त्याग, लगन तथा निष्काम सेवा के आदर्शों को भली भाँति चरितार्थ किया है। वे हमारे समाज के न सिर्फ मील के पत्थर, बल्कि पथ प्रदर्शक हैं और हमेशा प्रेरणा के स्रोत रहेंगे।

जय हिंद

मातृभूमि के सेवक- मेजर जनरल अजय चतुर्वेदी

(ए.वी.एस.एम और वी.एस.एम. से सम्मानित)

- दिलीप सिकंदरपुरिया, लखनऊ

शिवमंगल सिंह सुमन के शब्दों में,
क्या हार में, क्या जीत में,
किंचित नहीं भयभीत मैं,
कर्तव्य पथ पर जो मिले,
यह भी सही,वह भी सही

जब अजय जी के पैर पर प्लास्टर देखकर हमने हाल चाल पूछे तो आपने उक्त पंक्तियों को दोहराया, फिर बोले अरे! मेरे शरीर पर 16 फैक्चर एवं 93 टांके लगे हैं मैं तो एक सैनिक हूँ, जिसकी हिम्मत एवं हौसले की मिसाल दुनिया देती हैं। अजय जी का जन्म 4 जुलाई 1954 को लखनऊ में हुआ था, आपकी प्रारम्भिक शिक्षा-दीक्षा लखनऊ में ही हुई। आपके पिताजी श्री नरेशचंद्र 'सेठजी' (कछपुरा) तथा माताजी श्रीमती नर्वदा जी (पुरा) थी। LIFE IS A LEARNING PROCESS मेजर जनरल अजय का जीवन इस उक्ति को चरितार्थ करता है। अजय जी ने 1974 में सेना को ज्वाइन किया। अपने सेवा काल में ही कालेज आफ मिलिट्री इन्जिनियरिंग, पुणे से 1983 में बी.टेक.किया। उसके बाद आई.आई.टी. चैनई से एम.टेक., उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद से एम.एम.एस. तथा एन.डी.सी. दिल्ली से एम.फिल. किया। अपने सेवा काल में अधिकांश समय आप कोर आफ इंजीनियरिंग के 234 एवं 235 इंजीनियरिंग रेंजीमेंट में बंगाल एवं जम्मू कश्मीर तथा देश के विभिन्न क्षेत्रों में सेवारत रहे। आप कालेज आफ मिलिट्री इन्जिनियरिंग पुणे तथा कालेज आफ डिफेंस मैनेजमेंट में टीचिंग फैकल्टी में भी कार्यरत रहे। सन 1991 में अजय जी को Chief Army Staff Commendation Award सन 1993 में Army Commander Commendation Award से सम्मानित किया गया। आप 2008-2010 में अंडमान निकोबार द्वीप समूह पर कमाण्ड आफ इंडियन आर्म्ड फोर्सेज (ट्राइ सर्विस कमाण्ड) में चीफ आफ स्टाफ के पद पर कार्यरत रहे। सन 2012 आप सेना मुख्यालय, दिल्ली से महानिदेशक (कार्मिक) के पद से सेवानिवृत्त हुए। आपको भारत

के राष्ट्रपति द्वारा अति विशिष्ट सेवा मेडल (A.V.S.M.) तथा विशिष्ट सेवा मेडल(V.S.M.) से भी सम्मानित किया गया है।

मेजर जनरल अजय अपने युवा जीवन से ही एक उत्कृष्ट खिलाड़ी एवं एडवेंचर (साहसिक गतिविधियों) के शौकीन रहें हैं।आप सर्विसेज की तरफ से रोइंग (नौकायन) में राष्ट्रीय रिकॉर्ड तोड़कर राष्ट्रीय चैंपियन बनें। 1983 में विश्व चैंपियनशिप में राष्ट्रीय टीम में देश का प्रतिनिधित्व किया। 1989 एशियाई चैंपियनशिप एवं 1990 शंघाई एशियाई खेलों में आप राष्ट्रीय नौकायन टीम के कोच थे। उनके संरक्षण में ही भारत ने एशियाई खेलों में अपना पहला गोल्ड मेडल जीता था। 1980 में अजय जी ने पुणे से लखनऊ तक एकल साइकिल यात्रा की। 1985 में आपने हिसार चण्डीगढ़ बीकानेर के रेगिस्तान मार्ग पर स्कूटर यात्रा की। 2015 में जयपुर लखनऊ की मोटरसाइकिल यात्रा की थी। अजय जी एक प्रशिक्षित स्कूबा गोताखोर एवं पर्वतारोही भी है। आपने समुद्र में पानी के नीचे 21 मीटर की गहराई तक गोताखोरी की है।

सेवानिवृत्त के बाद भी अजय जी एक व्यवस्थित एवं सक्रिय जीवनचर्या में व्यस्त रहते हैं। उनका अधिकांश समय सैन्य रणनीति विश्लेषण एवं ऊर्जा संरक्षण एवं बौद्धिक गतिविधियों में व्यतीत होता हैं। आपकी सक्रीयता पर अटल जी की कविता चरितार्थ होती है ---

हार नहीं मानूंगा,रार नई ठानूंगा,
काल के कपाल पर लिखता-मिटाता हूं,
नये गीत गाता हूं,नये गीत गाता हूं।

2013-2015 में अजय जी आर.जी. पेट्रोलियम इंस्टीट्यूट, रायबरेली में निदेशक मंडल के एच.आर.एडवाइजर तथा 2015-2018 में रुड़की इंजीनियरिंग इंस्टीट्यूट के महानिदेशक रहे।

अजय जी को पढ़ने एवं लिखने की बहुत गहरी लगन है, उन्होंने कई देशी विदेशी पुस्तकों एवं पुस्तकों के अध्यायों का सम्पादन किया है। आपके द्वारा लिखित तीन पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुकी है........

1.. Water a Source of Future Conflicts.

2..Role of Pakistan in India's Energy Security.

3..Necular Energy in India's Energy Matrix.

आपकी अन्य दो पुस्तकें शीघ्र प्रकाशित होने वाली है। आप कई थिंक टैंक (ऐसी संस्था जहां विशेषज्ञों द्वारा सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं अन्य विषयों पर अनुसंधान, विश्लेषण, नीति निर्धारण , कार्य योजना का प्रस्तुतीकरण हो) में भी सक्रिय रहते हैं। आप पूर्व सैनिक थिंक टैंक 'स्ट्राइव' के उपाध्यक्ष, 'विजिन इंडिया ' के मेंटर, 'उ.प्र.इको डिवलेपमेंट फाउंडेशन' के मानद निदेशक, विवेकानंद केंद्र लखनऊ के थिंक टैंक 'विमर्श' के

कोर्डिनेटर हैं।

वर्तमान में अजय जी नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ हाइड्रोलॉजी, रुड़की, मिलिट्री इन्जिनियरिंग कालेज, पुणे, पंजाब यूनिवर्सिटी, चण्डीगढ़, एल बी एस अकेडमी ऑफ आई ए एस, मंसूरी के साथ ही देश विदेश के कई प्रतिष्ठित संस्थानों में गेस्ट स्पीकर है। सन 2021 में भारत सरकार ने आपको "अटल सम्मान" से सम्मानित किया।

आपने सेवाकाल तथा उसके उपरांत देश विदेश के कई स्थानों की यात्राएं की, लेकिन अपने संस्कारों से कभी भी प्याज-लहुसन का उपयोग नहीं किया। आपकी पत्नी श्रीमती रेनू (कम्पिल) पालिटेक्निक कालेज, लखनऊ से प्रोफेसर पद से सेवानिवृत्त हुई है। आपकी बड़ी सुपुत्री मेधा जर्मनी में अंतरराष्ट्रीय पत्रिका स्पींजर में एसोसियट एडीटर है तथा छोटी सुपुत्री प्रज्ञा बैंक आफ अमेरिका में वाइस प्रेसिडेंट है। मेजर जनरल अजय जी ने बच्चों को संदेश देते हुए कहा - बच्चों को अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित कर मेहनत,लगन एवं जूनून से उसे प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। इसी संदर्भ में आपने मैथिली शरण गुप्त को उद्त किया -

नर हो न निराश करो मन को,
कुछ काम करो, कुछ काम करो,
जग में रह कर कुछ नाम करो।
यह जन्म हुआ किस अर्थ को,
समझो जिसमें यह व्यर्थ न हो।
कुछ तो उपयुक्त करो तन को,
नर हो,न निराश करो मन को।।

देश एवं समाज में नैतिकता व संस्कारों की गिरावट पर अच्छे लोगों की अनदेखी पर नाराजगी प्रकट करते हुए अजय जी ने राष्ट्र कवि रामधारी सिंह दिनकर के निम्न शब्दों का उल्लेख किया --

समर शेष है नहीं पाप का भागी केवल व्याध।
जो तटस्थ हैं, समय लिखेगा उनके भी अपराध।।
वन्दे मातरम। जय हिंद।

मेजर जनरल महेन्द्र नाथ रावत

पी.वी.एस.एम शौर्य एवं बुद्धिमता की गाथा

- ब्रिगेडियर दीपेंद्र रावत

मेजर जनरल महेन्द्र नाथ रावत पी.वी.एस.एम का जन्म 23 जून 1929 में अनूपशहर में हुआ था। शुरूआत से ही वे अति मेधावी, लग्नशील एवं अनुशासित छात्र रहे। उन्होंने आगे की पढ़ाई आगरा और इलाहाबाद से पूर्ण की। वे स्वयं डाक्टर बनना चाहते थे। परन्तु उनके ज्येष्ठ भाई, स्व. विश्वनाथ रावत चाहते थे कि तक वे सिविल सर्विसेज में जाएं। परन्तु घर की थोड़ी आर्थिक तंगी और अपने से छोटे दो भाईयों की पढ़ाई के मद्देनजर उन्होंने 1948 में आई.एम.ए. में दाखिला लिया और सुपर ब्लाक में रहते हुए 1950 में 1/1 गोरखा राईफल में कमीशन लिया। वे बताया करते थे तक सुपर ब्लाक में रहते हुए भी वे कोई अपाईन्टमेन्ट नहीं बनाए गए। क्योंकि उनके प्रशिक्षक आफिसर्स चाहते थे तक वह मांसाहारी भोजन किया करें। परन्तु वे अपने निश्चय पर दृढ़ रहे और गोरखा रेजीमेन्ट में आने के बाद भी शाकाहारी बने रहे।

सैन्य जीवन

1950 में कमीशन लेने के तुरन्त बाद ही उन्होंने अपनी छाप बनाना शुरू कर दी थी। उनकी इस दौरान दो बार जनरल के.एम. करियप्पा से मुलाकात हुई और जनरल करियप्पा उनसे बहुत प्रभावित हुए। कई साल बाद जब वे स्टाफ कॉलेज में इन्स्ट्रक्टर थे। तब जनरल करियप्पा से फिर मिले। जनरल करियप्पा ने उन्हें तुरन्त पहचान लिया और कहा तक वे शुरू से समझ गये थे कि ले. महेन्द्र नाथ रावत का भविष्य उज्जवल होगा। मेजर जनरल एम.एन. रावत, एन.डी.ए. में इन्स्ट्रक्टर रहे। स्टाफ कॉलेज में इन्स्ट्रक्टर रहे और इन्फैन्टरी स्कूल के कमाडेन्ट रहे। उन्होंने यू.एस.ए. में फ़ोर्ट बर्निंग में भी एक वर्ष का कोर्स किया और उसे टॉप किया। इसके अलावा वह हेडक्वाटर ईस्टर्न कमाण्ड में जी.एस.ओ.–1 (ओपस) रहे। उन दिनों जी.एस.ओ.–1 के पद पर बटालियन कमाण्ड के बाद जाया जाता था। इस दौरान उनके

आर्मी कमाण्डर ले. जनरल सैम मानेकशा थे। कई दिनों तक कोई ब्रिगेडियर, पोस्ट न होने के कारण मेजर जनरल एम.एन. रावत, ब्रिगेडियर जनरल स्टाफ के लिए असोसिएट करते रहे। यह वह दौर था जब बांग्लादेश आपरेशन के प्लान फाईनलाईज किए जा रहे थे। जनरल रावत, आमी हेडक्वाटर में डायरेक्टर मिलेट्री ट्रेनिंग भी रहें। जनरल रावत ने 10 इन्फैन्टरी डिवीजन कमाण्ड की और उसके बाद वे चीफ ऑफ स्टाफ, सेंटरल कमाण्ड, लखनऊ में भी रहें। इस दौरान ऑपरेशन ब्लू स्टार के बाद सिख दंगे हुए और कई सैनिक दानापुर कैंट और ईस्टर्न कमाण्ड से भारी हथियारों के साथ भगोड़े हुए। परन्तु जनरल रावत ने अपनी सूझबूझ और सटीक प्लानिंग के द्वारा ये सुनिश्चत किया कि एक भी सैनिक दिल्ली तक भी न पहुंच पाए। इस कायण के तलए उन्हें पी.वी.एस.एम. से अलंकृत किया गया। इसके बाद में आर.ए.डब्लू. में प्रधानमंत्री के सुरक्षा सलाहकार रहे।

ये लड़ी लड़ाई

कमीशन के तुरन्त बाद वे हैदराबाद विलय की लड़ाई, आपरेशन पोलो में शामिल हुए। इसके बाद 1962 में नेफा सेक्टर में 48 इन्फैन्टरी ब्रिगेड के साथ बामडीला में ब्रिगेड मेजर के पद पर रहे। 1965 में छंब सेक्टर में उन्होंने अपनी बटालियन का नेतृत्व किया और अपने साहस और पराक्रम का परिचय देते हुए मेंशन–इन–डिसपैचिंग हासिल किया। 1971 में एक बार फिर पाकिस्तान के सियालकोट सेक्टर में अभूतपूर्व कामयाबी हासिल करने वाली 54 इन्फैन्टरी डिवीजन के कर्नल जनरल स्टाफ रहे।

व्यक्तित्व

मेजर जनरल महेन्द्र नाथ रावत एक रौबीले व्यक्तित्व वाले फौजी थे। उनका जीवन बहुत व्यवस्थित और अनुशासित था। वे अंत समय तक अपने शरीर का बहुत ख्याल रखते थे और नित्य व्यायाम करा करते थे। वे हमेशा अपनी बात पर दृढ़ रहा करते थे। उन्होंने केवल अपनी जुबान देने के कारण अपनी जमीन का एक हिस्सा आधे दाम पर बेंच दिया क्योंकि उनकी बात हो गई थी। कोई कागज इत्यादि न होने के बावजूद उन्होंने अपनी बात का मोल रखा। उसी प्रकार से, वे जिस मकान में इलाहाबाद में रहते थे, उसका पूर्ण पेमेन्ट कर चुके थे। परन्तु वह घर का रजिस्ट्रेशन उनके नाम नहीं हो पाया। मकान मालिक से उनकी मौखिक बात हुई थी, कि वे उसे और को न बेचेंगे न वारिस होने देंगे। इसलिए, उन्होंने जब इलाहाबाद छोड़ा तो कई करोड़ की संपति, यूँही छोड़ आए, क्योंकि जुबान का मोल होता है।

वे पढ़ाई में अत्यधिक रूचि रखते थे और सतत ज्ञानवर्धन करते रहते थे। इतिहास और दर्शन का तो उन्हें अत्यंत अधिक ज्ञान था। वे कई जगह लेक्चर के लिए आमंत्रित किए जाते रहे। सामाजिक सेवा मेजर जनरल एम.एन. रावत कई सामाजिक कार्यों के साथ जुड़े थे। अनूपशहर में स्कूल और कॉलेज के छात्रों को छात्रवृति दिया करते थे। उसके लिए उन्होंने अपने पिता और बड़े भाई के नाम से ट्रस्ट चलाया था। इसके अलावा इलाहाबाद के समीप भरवारी में भारतीय विद्या भवन के कॉलेज के साथ भी वे कई वर्ष तक जुड़े रहे। वे प्रयाग संगीत समिति के अध्यक्ष भी रहे थे। इस महान आत्मा का 30 सितम्बर 2022 को गोरखपुर में परमात्मा से विलय हुआ। उनका शानदार व्यक्तित्व और ज्ञान कई पीढ़ियों को प्रेरित करता रहेगा।

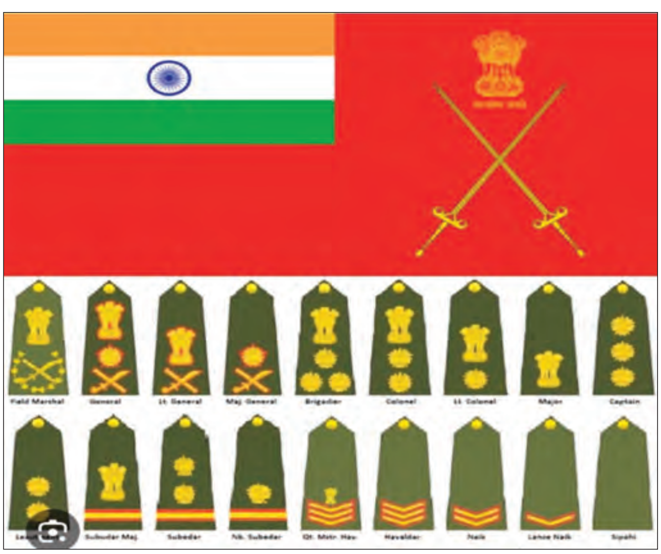

गौरव गाथा की मूर्ति - स्व. ब्रिगेडियर नरेन्द्र नाथ रावत (वीर चक्र)

- ब्रिगेडियर दीपेंद्र रावत

स्व0 ब्रिगेडियर नरेन्द्र नाथ रावत जी का जन्म 16 सितम्बर 1930 में अनूपशहर में हुआ था। अल्प आयु में ही पिता चौबे राजेश्वर नाथ रावत जी का देहान्त हो गया था। इसके बाद उनकी परवरिश बड़े भाई श्री विश्वनाथ रावत जी की देख-रेख में हुई। शुरू से ही उन्हें कुश्ती का बड़ा शौक था और उन दिनों में जिले और राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं में जीत हासिल करी। उनका शरीर अत्यन्त बलिष्ठ और व्यक्तित्व बहुत मोहक था। उनके बड़े भाई मेजर जेनरल महेन्द्र नाथ रावत ने सेना में कमीशन प्राप्त कर लिया था। इससे उन्हें भी एक राह दिखी और काबुलिया रावतों की सैन्य परम्परा को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने 1950 में भारतीय सैन्य अकादमी ज्वाईन करके 1952 में कमीशन प्राप्त किया।

सैन्य जीवन

आप ने शुरू में इन्फैन्ट्री में कमीशन प्राप्त किया और 20 राजपूत में कार्यरत रहे। 1956 में आपने आर्टीलरी ज्वाइन कर लिया और 1983 तक कार्यरत रहे। वे अपने निडर स्वभाव और स्पष्टवादिता के लिए जाने जाते थे। उन्होंने स्टाफ कॉलेज से स्नातकोत्तर होकर 30 इन्फैन्ट्री ब्रिग्रेड में ब्रिग्रेड मेजर की कमान संभाली। उसके पहले वे 4 इन्फैन्ट्री डिवीजन के जी.एस.ओ.-1 ओपस भी रहे थे और इसी दौरान 1962 के युद्ध में प्रतिभाग लिया। उन्होंने 166 फील्ड रेजीमेन्ट् की कमान 1971 के युद्ध के दौरान सकुशल रूप से की। इसके बाद वे कर्नल जी.एस.2 कोर रहें और एन.सी.सी. आफिसर ट्रेनिंग एकेडमी, कमाण्डेन्ट् भी रहें। उन्होंने 36 आर्टीलरी ब्रिग्रेड और 1 कोर आर्टीलरी ब्रिगेर्ड की भी कमान संभाली। इसके बाद वे मेजर जनरल के पद के लिए अप्रूव हो गए, परन्तु काल ने उन्हें इससे पहले ही अपने पास बुला लिया।

लड़ाईयाँ और अदम्य साहस की गाथा

ब्रिगेडियर नरेन्द्र नाथ रावत ने 1961 में गोआ के मुक्ति युद्ध में भाग लिया। इस युद्ध के दौरान, अकेले ही जाकर पुर्तगाल के सैनिकों के एक सेक्शन (लगभग 10 सैनिक) का आत्मसमर्पण करवा उन्हें बन्दी बनाया। इसके तुरन्त बाद ही 1962 के युद्ध में उन्होंने नेफा के तवांग और दिरांग जौंग में चीन के साथ लोहा लिया।

इस युद्ध में स्टाफ में रहते हुए कई जगह उन्होंने मोर्चा संभाला और डटे रहे आसपास की कई चौकिया चीनी हमलावरों में नष्ट कर दी थी परंतु आपने अपनी शौर्य गाथा में कोई कमी नहीं आने दी युद्ध की समाप्ति पर उन्हें मृत घोषित कर दिया गया। उनके घर पर अंधेरा छा गया परंतु यह वीर 10 दिनों बाद चीन अग्रेषित स्थान से सुरक्षित वापस आ गए। उन्हें महावीर चक्र के लिए अनुशंसा हुई। परंतु अपने कुछ सीनियर्स की खामियों की वजह को स्पष्ट रूप से सेना मुख्यालय में बेबाक कह देने की वजह से वह इस पद से वंचित रह गए। हैंनडरशन ब्रोकस रिपोर्ट की भी जो हिस्सा लीक हो गया है, उसमें उनके साहस पर युद्ध कौशल की भूरी भूरी प्रशंसा की गई। 1965 में उन्होंने बाड़मेर सेक्टर में फिर एक बार फिर पाकिस्तान से दो-दो हाथ किए। उनके साहस और युद्ध कौशल के लिए उन्हें मेंशन इन डिस्पैच से अलंकृत किया गया। 1971 के युद्ध में फाजिल्का सेक्टर में 166 फील्ड रेजीमेन्ट् को कमान करते हुए उन्होंने फिर एक बार पाकिस्तान के साथ युद्ध में भाग लिया। यहाँ बेरीवाला नाम की जगह पर पाकिस्तान ने एक ब्रिज हेड बना लिया था। दोनों ओर से भीषण युद्ध हुआ और कई सैनिक वीरगति को प्राप्त हुए। इस युद्ध के दौरान अपने प्राणों की परवाह ना करते हुए अपनी इन्फेंट्री द्वारा छोड़ी गई एक आर.सी.एल. गन को दुश्मन के कब्जे से छुड़ाकर वापिस लाए। उनके बारे में 67 ब्रिगेड के कमांडर ने कहा कि आज तक कोई ऐसा वीर नहीं देखा जिसे अपनी जान की परवाह नहीं है। डॉ. सुधीर बलौरिया, पूर्व चीफ सेक्रेटरी जम्मू एवम कश्मीर, जो उस समय उसी ब्रिग्रेड में पोस्टेड थे लिखते हैं कि कर्नल नरेंद्र नाथ रावत मेरे परिवार वाले नहीं थे पर उनकी मौत पर मैंने भी मातम मनाया क्योंकि सैन्य परंपरा, साहस और लीडरशिप क्या होती है। यह मैंने कर्नल रावत से युद्ध के दौरान सीखी। इस युद्ध में उनके अद्मय साहस के लिए उन्हें वीर चक्र से पुरस्कृत किया गया।

व्यक्तित्व

ब्रिगेडियर नरेंद्र नाथ रावत रौबीले और सहज दोनों रूप को एक साथ सार्थक करते थे। वह बहुत दृढ़ निश्चय, साहसी और अपनों के साथ बहुत सहज व्यक्ति थे। उन्हें खेलकूद खासकर कुश्ती से बहुत लगाव था। सेना में वे अपनी बेबाकी और अदम्य साहस के लिए जाने जाते थे। उनका 3 नवंबर 1983 को सैन्य काल में ही देहांत हो गया था। उनकी वीरगाथा आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करती रहेगी और चतुर्वेदी समाज को गौरवान्वित करती रहेगी। जय हिंद

सैन्य परम्परा की एक और कड़ी - ब्रिगेडियर दीपेन्द्र रावत

ब्रिगेडियर दीपेन्द्र रावत को सैन्य परम्परा विरासत में प्राप्त हुई। उनके पिता ब्रिगेडियर नरेन्द्र नाथ रावत, वीर चक्र और ताऊजी, मेजर जनरल महेन्द्र नाथ रावत से उन्होंने साहस, रण कौशल, सैन्य इतिहास, रणनीति इत्यादी का ज्ञान हासिल किया और काबुलिया रावतों की सैन्य परम्परा को बरकरार रखा। उनका जन्म 03 नवम्बर 1968 को झाँसी में हुआ। बचपन से ही युद्ध से जुड़ी बातें और सेना के माहौल में बड़े होकर स्वयं सेना में आना शायद उनके लिए स्वभाविक या पूर्व निर्धारित ही था। उनकी पढ़ाई कई जगह हुई, वे शुरू से एडवेंचरस एक्टिवीटिस जैसे रॉक क्लाइम्बिंग, ट्रैकिंग इत्यादि स्पोर्ट्स में बहुत रूचि रखते थे।

सैन्य जीवन

उन्होंने 1990 में आई.एम.ए. से उत्तीर्ण होकर आटीलरी में कमीशन प्राप्त किया। 1993 में वे यू.एन. के अंतर्गत सोमालिया में शाँति सेना के साथ गए। यहाँ पर उन्होंने कई यू.एन. की एजेंसियों के साथ सोमालिया में भुखमरी और मेडिकल की समस्याओं के निवारण के लिए दुर्गम और जटिल स्थानों पर काम किया। उसके बाद उन्होंने लॉग गनरी स्टाफ कोर्स एवम स्टाफ़ कॉलेज से स्नातकोत्तर किया। लॉग गनरी कोर्स में अच्छे प्रदर्शन के चलते वे स्कूल ऑफ आटीलरी में इंस्ट्रक्टर रहे। उन्होंने अरूणाचल में 40 माउन्टेन ब्रिगेड के ब्रिगेड मेजर का कार्य सम्भाला। ये वही जगह है जिसे पहले नेफा के नाम से जाना जाता था और जहाँ उनके पिता को 1962 के युद्ध में मृतक घोष्रित कर दिया गया था। इसके पश्चात उन्होंने लेह-लद्दाख सेक्टर में दरभुक में अपनी रेजिमेंट की कमान को संभाला। वे मिनिस्ट्री ऑफ डिफेन्स में एक्यूजीशन विंग में भी रहे और आटीलरी के आधुनिकीकरण में एक मुख्य भूमिका निभाई। ब्रिगेडियर दीपेन्द्र रावत ने अपने खेल-कूल और एसवेंचर खेलों के प्रेम को सेना में भी जारी रखा। उन्होंने सतलुज जैसे दुर्गम नदी पर रिवर राफ्टिंग अभियान का नेतृत्व किया। ये उस नदी पर पहला अभियान था। इसके लिए उन्हें जी.ओ.सी.-इन-सी कमाण्डेशन कार्ड से सम्मानित किया गया। वे आटीलरी की स्क्वैश टीम के भी हिस्सा रहे। इसके अलावा उन्हें मोटर साईकिल का भी शौक है और कई लंबे एवं दुर्गम स्थानों पर मोटर साईकल की सैर कर चुके हैं।

(आत्मकथ्य)

***

श्री जगदीश चंद्र पाठक (अशोक चक्र)

- नीरज पाठक, भोपाल

श्री जगदीश चंद्र पाठक प्रथम था श्री शालिग्राम जी पाठक के कनिष्ठ पुत्र श्री जगदीश चंद पाठक अशोक चक्र भारत की तत्कालीन एकमात्र अंतरराष्ट्रीय हवाई सेवा एयर इंडिया में नेविगेटर के पद पर थे 11 अप्रैल 1955 की घटना है तत्कालीन

श्री जगदीश चंद पाठक | वैद्य सुरेशचन्द्र चतुर्वेदी

प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू को चीन के प्रधानमंत्री श्री लव एंड लाइफ के साथ जकार्ता बैठक में शामिल होने जाना था इसलिए तू एयर इंडिया का विमान काश्मीर प्रिंसेस तैयार किया गया और उसमें श्री जगदीश चंद पाठक को नेविगेशन का दायित्व सौंपा गया किन्हीं कारणवश कार्यक्रम बदला और श्री चावला ने अलग उड़ान से जाने का निश्चय किया पीकिंग के आने आगे उड़ान को व्यवसायिक बना दिया गया। विमान जब प्रशांत महासागर के ऊपर जो उड़ रहा था उस में बम विस्फोट हुआ और विमान में आग लग गई ऐसी विषम परिस्थितियों में अदम्य साहस का परिचय देते हुए श्री जगदीश चंद पाठक ने विमान चालक में पायलट की मदद की यात्रियों को साहस बनाया तथा दुर्घटना तथा

वायरलेस यंत्र से एसएससी वसूल संदेश भेजा चालक दल के भरसक प्रयासों के बावजूद निर्माण को दुर्घटना से बचाए से बचाया नहीं जा सका विमान सागर से टकराकर तीन टुकड़ों में बिखर गया दुर्घटना को 24 घंटे से अधिक हो चुके थे और हम सभी परिजन किंकर्तव्य विमूढ़ की स्थिति में थे।

इस दुर्घटना में श्री जगदीश चंद्र पाठक का एक हाथ टूट गया श्री जगदीश चंद्र पाठक एक अच्छे तैराक बीते एक हाथ टूटा होने के बावजूद सागर की लहरों के विपरीत लगातार 8 घंटे करते हुए एक निर्जन से टापू पर किनारे लगे टापू पर भयंकर कांटो भरी दलदल थी महासागर के उस क्षेत्र में सभी पानी के जहाजों को सहायता के लिए सरकारों के संदेश भेजे गए इन्हीं संदेशों के आधार पर एक व्यवसायिक जहाज ने उनकी मदद की तथा उनके प्राथमिक इलाज की व्यवस्था की इस दुर्घटना में केवल 3 विमान कर्मी श्री दीक्षित श्री कार्य तथा श्री पाठक ही जीवित बच सके।

ऐसी विषम परिस्थितियों में साहस न होने तथा सूझबूझ से कर्तव्य पालन करने के उपलक्ष में भारत के महामहिम राष्ट्रपति डॉ राजेंद्र प्रसाद ने असैनिक क्षेत्र में शौर्य परिषद प्रदर्शन के लिए अशोक चक्र से सम्मानित किया।

***

देश सेवा के जज्बात......
विंग कमांडर अनिरुद्ध कुमार - गोपाल जी

- दिलीप सिकंदरपुरिया, लखनऊ

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर सेना में सेवा देने वालो से मिलना मेरा सौभाग्य रहा – विंग कमाण्डर

अनिरुद्ध कुमार जी सन 1965 एवं 1971 के पाक एवं बंगला देश युद्ध में एयरफोर्स के Eastern Fighter Controller Branch में सेवारत रहते हुए सक्रिय योगदान दिया था। आप 1964 से 1993 तक एयरफोर्स में सेवारत रहे।आपका जन्म 1 मई 1941 को हुआ था। आपके पिताजी पं. उपेन्द्र नाथ जी एवं माताजी श्रीमती मालती थी।आप पं. श्रीनारायण जी भइया साहब (इटावा) परिवार से हैं। आप आगरा विश्वविद्यालय की लॉन टेनिस टीम के कप्तान रहे। सेना में रहते हुए गोपाल जी ने कभी भी प्याज–लहुसन का उपयोग नहीं किया। आप मैस में जाने पर झौंक लगवाने के लिए हींग स्वयं ही ले जाते थे। आप वर्तमान में सपरिवार लखनऊ में रहते हैं।

***

सेना के गौरव - कर्नल सौरभ चतुर्वेदी

– श्रीमती रजनी चतुर्वेदी, कानपुर

जिस व्यक्ति में हिम्मत हो साहस और देशभक्ति का जज्बा हो और दिल में कुछ करने गुजरने की तमन्ना हो ऐसे व्यक्ति भारतीय सेना का गौरव बनते हैं। हमारे सैनिक सीमा प्रहरी बन जागते हैं, तब हम चैन की नींद सोते हैं। शांति काल में भी हमारी सेना गरम तपते रेगिस्तान, ठंड की सर्द ढकी चोटियों

और सीलन भरे जंगलों में दिन गुजरते हुए हमें सुरक्षा का अहसास करवाती हैं। ऐसी ही लेह की बर्फीली सर्दियों में तैनात थे लेफ्टिनेंट सौरभ चतुर्वेदी। आजकल महू में तैनात हैं। अपने मामा लेफ्टिनेंट जनरल वी,.के. चतुर्वेदी से प्रेरणा ले, सौरभ ने 1999 में कमीशन प्राप्त किया और अपने माता–पिता श्रीमती चंद्रा चतुर्वेदी एवं स्वर्गीय ध्रुव चंद्र चतुर्वेदी का नाम रोशन किया। अपने सभी कोर्सेज में उच्च स्थान हासिल करने वाले सौरभ चतुर्वेदी का विवाह क्षिप्रा सुपुत्री श्रीमती रजनी एवं श्री स्वतंत्र प्रकाश चतुर्वेदी (कछपुरा/ कानपुर) से संपन्न हुआ। कर्नल सौरभ चतुर्वेदी का जन्म 4 मार्च 1976 को प्रयागराज में हुआ था।

उनकी उपलब्धियों के लिए उन्हें चीफ कमांडेंट कार्ड दो बार दिया गया। आपकी श्रेष्ठ सेवाओं के लिए आर्मी कमांडर कमांडेशन कार्ड तीन बार प्रदान किया गया। आप विषम परिस्थितियों के समय डोकलाम में पदस्थ भी थे।

***

समाज गौरव - कर्नल निशांत चतुर्वेदी

–श्रीमती रजनी चतुर्वेदी, कानपुर

देश भक्ति का जज्बा लिए हुए एनडीए से पास होकर कर्नल निशांत चतुर्वेदी ने

सेना में 11 दिसंबर 1999 को 3 JAK LI (जैक लाई) में कमीशंड लिया। आप श्री स्व. श्री प्रभात कुमार चतुर्वेदी एवं स्व. श्रीमती आशा चतुर्वेदी (कछपुरा/ कानपुर) के जेष्ठ पुत्र हैं। आपको कमांडेशन कार्ड द्वारा सम्मानित किया जा चुका है।

एयर मार्शल कीर्ति शेखर चतुर्वेदी
(पी. वी. एस. एम.,वी.एस.एम.)

- मुनींद्र नाथ चतुर्वेदी, नोएडा

एयर मार्शल श्री कीर्ति शिखर का जन्म प्रयागराज उत्तर प्रदेश में 21 मार्च 1947 को हुआ था। यह स्व. श्री शिव कुमार चतुर्वेदी एवं स्व. श्रीमती लक्ष्मी चतुर्वेदी के पुत्र हैं। आपकी प्रारंभिक शिक्षा ईस्टर्न रेलवे कॉलेज, मुगलसराय में हुई। बीआईटी पिलानी से इंजीनियरिंग 1969 में की। पिलानी में अध्ययन के दौरान ही इनका चयन भारतीय वायु सेना में हो गया था।

तत्पश्चात सीएफटीसी बेंगलुरु में ट्रेनिंग प्राप्त करके 1970 में फ्लाइंग ऑफिसर पद पर कानपुर में नियुक्त हुए। अपने 37 वर्षों के सेवा में भारतीय वायु सेना में इन्होंने अच्छी ख्याति अर्जित की। फ्लाइंग ऑफिसर के प्रारंभिक वर्षों में ही अपनी कार्य कुशलता हेतु अनुरक्षण कमान के कमांडिंग इन चीफ का सराहना पत्र एवं पश्चिमी वायु सेना कमान के कमांडर इन चीफ का प्रशंसा पत्र दिया गया। 1980 में मिग–23 वायुयान के भारतीय वायु सेना में खरीदे जाने पर इन्हें यूएसएसआर भेजा गया। मिग 23 के मेंटेनेंस कोर्स के लिए। 1986 में मिग –23 स्क्वायर में कार्य करते हुए ही विशिष्ट सेवा मेडल भारत के राष्ट्रपति श्री ज्ञानी जैल सिंह द्वारा प्राप्त किया गया। वर्ष 2004 में एयर मार्शल बनकर वायु सेना भवन में एयर ऑफिसर इंचार्ज मेंटेनेंस (AOM) का पद हासिल किया। 2005 में अनुरक्षण कमान, नागपुर में कमांडिंग इन चीफ पद पर पदासीन हुए। इस प्रकार यह पहले चतुर्वेदी है जिन्होंने कमांडिंग इन चीफ का पद को प्राप्त किया।

भारत के राष्ट्रपति श्री ए.पी.जे. अब्दुल कलाम द्वारा यह परम विशिष्ट सेवा मेडल से 2006 में सम्मानित हुए। वर्ष 2006 में उन्होंने अपने पूर्व विद्यालय ईस्टर्न रेलवे कॉलेज पुस्तकालय को भेंट स्वरूप भारतीय वायु सेना की ओर से मिग–21 का उपहार दिया।

एयर वाइस मार्शल शिशिर कुमार चतुर्वेदी (ए.वी.एस.एम, वी.एस.एम)

- मुनीन्द्र नाथ चतुर्वेदी, नोयडा

एयर वाइस मार्शल शिशिर कुमार चतुर्वेदी का जन्म प्रयागराज में 1 नवंबर 1937 को हुआ। यह स्वर्गीय शिव कुमार चतुर्वेदी एवं स्वर्गीय श्रीमती लक्ष्मी चतुर्वेदी के जेष्ठ पुत्र हैं। आपकी प्रारंभिक शिक्षा प्रयागराज व ईस्टर्न रेलवे कॉलेज मुगलसराय में हुई। प्रयाग विश्वविद्यालय से 1958 में एम.ए. इंग्लिश लिटरेचर में करने के पश्चात ही इनका चयन भारतीय वायु सेना में हो गया एवं 30 दिसंबर 1959 को पायलट ऑफिसर के पद पर कमीशन प्राप्त किया। अपने पासिंग आउट परेड को इन्होंने ही कमांड किया और बेस्ट कैडेट का पदक प्राप्त किया। वायुसेना के 34 वर्षों की सेवा में विभिन्न पदों पर आसीन रहे हैं

और कार्यकुशलता की कई सराहना अर्जित की। 1971 में भारतीय वायुसेना के अनुरक्षण कमान के कमांडिंग–इन–चीफ का सराहना पत्र प्रदान हुआ और 1974 में भारतीय वायु सेना अध्यक्ष का प्रशंसा पत्र प्राप्त किया। 26 जनवरी 1980 को भारत के राष्ट्रपति श्री नीलम संजीव रेड्डी ने इनकी उत्कृष्ट सेवा की मान्यता देते हुए विशिष्ट सेवा मेडल प्रदान किया। तत्पश्चात 26 जनवरी 1994 में राष्ट्रपति श्री शंकर दयाल शर्मा ने इनकी असाधारण सेवा को मान्यता देते हुए अति विशिष्ट सेवा मेडल प्रदान किया। 1998 में पहला विश्व ब्लाइंड क्रिकेट कप संपन्न कराने में इनका विशेष योगदान रहा है।

विंग कमाण्डर अक्षत चतुर्वेदी

स्व. श्री भुवनेश चन्द्र जी एवं स्व. श्रीमती साधना जी (मैनपुरी/ आगरा) के पुत्र विंग कमाण्डर अक्षत चतुर्वेदी (आशू) का जन्म अक्टूबर 1979 में मुरादाबाद में हुआ। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा लखनऊ व हल्द्वानी से एवं उच्च शिक्षा आगरा से

हुई। भुवनेश जी व साधना जी के असमय देहांत के उपरांत इनका पालन पोषण इनके चाचा स्व. डॉ. हिमांशु जी के संरक्षण में हुआ। जिनके तेजोमय व्यक्तित्व का अक्षत के मानस पर विशेष प्रभाव रहा। ये सन 2002 में भारतीय वायु सेना की प्रशासनिक शाखा हेतु चयनित हुए। वायु सेना अकादमी हैदराबाद से प्रशासन एवं वायु यातायात नियंत्रण का प्रारम्भिक प्रशिक्षण पाने के उपरांत ये पंजाब, अण्डमान–निकोबार, राजस्थान एवं मध्यप्रदेश राज्यों में स्थित विभिन्न इकाइयों व वायु सेना मुख्यालय नई दिल्ली में पदस्थ रह चुके हैं। यह नीलगिरि स्थित डिफेंस सर्विसेज़ स्टाफ़ कॉलेज के स्नातक हैं एवं वायु सेना अकादमी में एक प्रशिक्षक की भुमिका भी निभा चुके हैं। वर्तमान में यह जम्मू–कश्मीर राज्य में स्थित वायु सेना की एक सामरिक इकाई के कमान अधिकारी हैं। इनका विवाह स्व. श्री कमलेश जी व स्व. श्रीमती मञ्जुला जी (मलयपुर/भुवनेश्वर) की पुत्री श्रीमती प्रतिष्ठा (नेहा) से हुआ है। प्रभुकृपा से दम्पति को दो संतानों – बिटिया अनघा व बेटे अभ्युदय – का सुख प्राप्त है। (आत्मकथ्य)

एयर कमोडोर श्री आशुतोष चतुर्वेदी

- डॉ. नमिता चतुर्वेदी, भोपाल

एयर कमोडोर श्री आशुतोष चतुर्वेदी सुपुत्र स्व. श्री भरत चंद चतुर्वेदी एवं स्व. श्रीमती प्रमिला चतुर्वेदी (होलीपुरा/ भोपाल) ने 2001 में कश्मीर में आतंकवादियों द्वारा एयर फोर्स स्टेशन पर हुए हमले को वीरता पूर्वक नाकाम किया था, इसलिए

इन्हें इनकी वीरता के लिए वायु सेना मेडल (गैलेंट्री) से सम्मानित किया गया।

कौन था पहला कावड़िया

- सुचित्रा सिकंदपुरिया, लखनऊ

श्रावण का महीना आते ही हर कोई शिव की भक्ति में झूमने लगता है. इस पावन त्योहार में पुरे उत्तर भारत और अन्य राज्यो से कावड़यि शिव के पवित्र धामो में जाते है तथा वहां से गंगाजल लाकर शिव का जलाभिषेक करते है. कावड़यि को नंगे पैर बहुत दूर चलकर गंगा जल लाना होता है तथा शर्त यह होती है की कावड़ी, शिव कावड़ को जमीन में नही रखता. इस प्रकार शिव भक्त अनेक कठिनाइयों का समाना करके गंगा जल लाते है तथा उससे शिव का जलाभिषेक करते है.! परन्तु क्या आपने कभी यह सोचा है की आखिर वह कौन पहला व्यक्ति होगा जो सबसे पहला कावड़ी था तथा जिसने सबसे पहले भगवान शिव का जलाभिषेक कर उनकी कृपा प्राप्त करी व इस परम्परा का आरम्भ हुआ। एक बार ऋषि जमदग्नि ने राजा सहस्त्र बाहु व उनकी सेना का बहुत अच्छी तरह से आदर सत्कार किया, उनकी सेवा में किसी भी तरह की कमी नहीं आने दी . सहस्त्रबाहु ऋषि के आदर सत्कार से बहुत ही प्रसन्न हुआ परन्तु उसे यह बात समझ में नहीं आ रही थी की आखिर एक साधारण एवम गरीब ऋषि उसके और उसकी सेना के लिए इतना सारा खाना कैसे जुटा पाया !

तब उसे अपने सैनिकों से यह पता लगा की ऋषि जमदग्नि के पास एक कामधेनु नाम की दिव्य गाय है. जिससे कुछ भी मांगो वह सब कुछ प्रदान करती है! जब राजा को यह ज्ञात हुआ की इसी कामधेनु गाय के कारण ऋषि जमदग्नि संसाधन जुटाने में कामयाब हो पाया तो उस गाय को प्राप्त करने के लिए सहस्त्रबाहु के मन में लालच उत्पन्न हुआ।

उसने ऋषि से कामधेनु गाय मांगी परन्तु ऋषि जमदग्नि ने कामधेनु गाय को देने से मना कर दिया. इस पर सहत्रबाहु अत्यंत कोर्धित हो गया तथा उसने कामधेनु गाय को प्राप्त करने के लिए ऋषि जमदग्नि की हत्या कर दी।

जब यह खबर परशुराम को पता लगी की सहस्त्रबाहु ने उनके पिता की हत्या कर दी है तथा वह कामधेनु गाय को अपने साथ ले गया है तो वे अत्यंत क्रोधित हो गए. उन्होंने सहस्त्रबाहु के सभी भुजाओ को काट कर उसकी हत्या कर डाली.बाद में परशुराम ने अपने तपस्या प्रभाव से अपने पिता जमदग्नि को पुनः जीवनदान दिया. जब ऋषि को यह बात पता चला की परशुराम ने सहस्त्रबाहु की हत्या कर दी तो उन्होंने इसके पश्चाताप के लिए परशुराम जी से भगवान शिव का जलाभिषेक करने को कहा।

तब परशुराम अपने पिता के आज्ञा से अनेको मिल दूर चलकर गंगा जल लेकर आये तथा आश्रम के पास ही शिवलिंग की स्थापना कर शिव का महाभिषेक किया व उनकी स्तुति करी !! इसी वजह से माना जाता है कि भगवान परशुराम ही पहले कांवड़िए थे।

महामृत्युंजय मंत्र

- सुगन्धा प्रशांत चतुर्वेदी, लखनऊ

सावन के महीने में भगवान शिव के महामृत्युंजय मंत्र का जप करना बहुत ही असरदार होता है। शिवपुराण में बताया गया है कि सावन के महीने में महामृत्युंजय मंत्र का जप करने के ढेरों फायदे होते हैं। मान्यता है कि सावन का महीना शिवजी को सबसे प्रिय है और इस महीने में महामृत्युंजय मंत्र का जप करने से भगवान शिव जल्द प्रसन्न होते हैं और आपकी मनोकामनाएं पूर्ण करते हैं। आइए आपको बताते हैं सावन में महामृत्युंजय मंत्र का जप करने के लाभ और इसका सही उच्चारण।

ऊं त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम।
उर्वारुकमिव बन्धनान मृत्योर्मुक्षीय मामृतात!!

गंभीर रोग को दूर करने के लिए महामृत्युंजय मंत्र

अगर आपके घर में कोई गंभीर रूप से बीमार पड़ा है और उस बीमारी से उसके मरने की आशंका आपको सता रही है तो आप अपने घर में महामृत्युंजय मंत्र का जप करवा सकते हैं। अगर आप स्वयं नहीं कर सकते हैं तो किसी सिद्ध ब्राह्मण या फिर पुरोहित से इस मंत्र का जप करवा सकते हैं। ऐसी मान्यता है कि इस मंत्र में इतनी ताकत होती है कि यह गंभीर से गंभीर रोग को सही कर सकता है और रोगी को मौत के मुंह से बाहर निकाल सकता है।

अकाल मृत्यु से रक्षा के लिए महामृत्युंजय मंत्र

शिवपुराण में बताया गया है कि महामृत्युंजय मंत्र में अकाल मृत्यु को भी टालने की क्षमता होती है। अगर किसी के हाथ की रेखाओं में अकाल मृत्यु का योग है तो उसे रोजाना महामृत्युंजय मंत्र का जप करना चाहिए। यह मंत्र आपकी रक्षा करेगा। अगर किसी की कुंडली में गंभीर बीमारी से मरने या फिर किसी दुर्घटना से मरने के योग हैं तो महामृत्युंजय मंत्र के जप से आप उस पर भी जीत हासिल कर सकते हैं।

भय दूर करने के लिए महामृत्युंजय मंत्र

अगर आपका मन अशांत है या फिर आपको किसी प्रकार की अनहोनी का डर सताता है तो भी आपके लिए महामृत्युंजय मंत्र बहुत उपयोगी है। भविष्य पुराण में बताया गया है कि अगर आपको रात में सोते वक्त किसी प्रकार का डर लगता है तो आपको रोजाना कम से कम 108 बार महामृत्युंजय मंत्र का जप करना चाहिए। अपने घर में बच्चों को भी महामृत्युंजय मंत्र याद करवाइए और रोजाना उनसे स्नान के बाद यह मंत्र जपने को कहें।

धन वृद्धि के लिए महामृत्युंजय मंत्र का जप

अगर आप काफी समय से धन की कमी से जूझ रहे हैं तो सावन के महीने में महामृत्युंजय मंत्र का जप करने से आपको लाभ हो सकता है। ऐसा करने से आपको व्यापार में लाभ होगा और नौकरी में भी आपका रुकी हुई तरक्की होने लगेगी। इसके जप से काफी पुराना कर्ज चुकाने में भी सफल होंगे और आपको रुका धन प्राप्त होगा। यह मंत्र आपको शिवलिंग के समीप बैठकर करने से जल्द लाभ होगा।

महामृत्युंजय मंत्र का जप करने के नियम

महामृत्युंजय मंत्र का जप कभी भी जमीन पर बैठकर न करें। हमेशा कोई आसन का प्रयोग करें। कुश का आसन प्रयोग करना सबसे अच्छा माना जाता है। इस मंत्र का जप करने के लिए घर में या फिर मंदिर कोई जगह निर्धारित करें और रोजाना उसी स्थान पर बैठकर इस मंत्र का जप करें।

सदैव पूर्व दिशा की ओर मुख करके इस मंत्र का जप करें। मंत्र का जप करते समय मन को एकाग्रचित रखें। जितने दिन इस मंत्र का जप करें उतने दिन प्याज लहसुन और मांसाहार का प्रयोग भूलकर भी न करें। महामृत्युंजय मंत्र का जप करते समय ध्यान रखें कि इसका उच्चारण ठीक से हो और रोजाना इस मंत्र के जप की संख्या बढ़ाएं, कम न करें।

इस मंत्र का जप करते समय धूप और दीपक को सदैव जलाकर रखें। इस मंत्र का जप करने के लिए सदैव रुद्राक्ष की माला का प्रयोग करें।

सहयोग के लिए आभार तथा निवेदन
दिनाँक 17.07.2023 तक
अन्नपूर्णा सहायता हेतु प्राप्त सहयोग राशि

सजातीय बान्धवों को एक सांकेतिक सहयोग राशि रु २४००० वार्षिक (रु २०००/ – प्रति माह के हिसाब से) श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा द्वारा समाजहित के लिए बांधवों के अमूल्य सहयोग से अन्नपूर्णा एवं छात्रवृत्ति आदि के अंतर्गत प्रदान की जा रही है।

वर्तमान में 40 परिवारों को यह सहायता त्रैमासिक जनवरी, अप्रैल, जुलाई तथा अक्टूबर के प्रथम सप्ताह सीधे उनके बैंक खाते हस्तांतरित की जा रही है । आप सभी से इस पुण्य कार्य में सहयोग के लिए सादर आग्रह है।

आपसे अनुरोध है स्वेच्छा अनुसार किसी भी राशि का सहयोग करने की कृपा करें।

निम्नांकित सम्मानित बान्धवों ने अन्नपूर्णा सहायता राशि मैं वित्तीय वर्ष 2023 – 24 में अपना अमूल्य योगदान किया है :–

१. श्री जयंत चतुर्वेदी (लखनऊ) –Rs 12,000/–

२. आनंद सिंह चतुर्वेदी परिवार , होलीपुरा की ओर से श्री भरत चतुर्वेदी (रिसरा) द्वारा – Rs .24000/–

३. श्री बी न चतुर्वेदी एवं श्रीमती संतोष चतुर्वेदी (नोएडा) – विवाह की ६०वीं वर्षगाँठ के उपलक्ष्य मैं – Rs .5100/–

४. श्री अविनाश जी चतुर्वेदी (होलीपुरा / कानपुर) – 12000/–

५. श्री जगदीश प्रसाद जी चतुर्वेदी (भोपाल)– Rs. 5100/–

६. श्री अनुज चतुर्वेदी (बिजकोली / दिल्ली) द्वारा पिताश्री स्व राकेश जी के जन्मदिन की स्मृति मैं – Rs.12000/–

७, विवाह की वर्षगाँठ के उपलक्ष्य मैं श्री मुरलीधर चतुर्वेदी , चन्द्रपुर / मथुरा द्वारा

Rs.5151 /–

८, श्री स्वयंभू चतुर्वेदी (बंगलौर) द्वारा Rs.24,000/– (२०२२–२३ मैं भी आप का सहयोग प्राप्त हुआ था)

९,. श्री प्रभाकर चतुर्वेदी (गोविंदपुरा / जयपुर) द्वारा Rs.24,000/–

१०. श्रीमती आरती एवं wing commander श्री अनिरुद्ध चतुर्वेदी (इटावा / लखनऊ) – Rs.12,000/–

१०. अपने ६२ वें जन्मदिन के उपलक्ष्य सुश्री ममता चतुर्वेदी (कोटा) Rs . 2100/–

कुल प्राप्ति सहयोग राशि रुपये – Rs,

Rs. 1,37,451/–

सहयोग के लिए सभी का आभार*

वित्तीय वर्ष 2023–24 में अन्नपूर्णा योजना के अंतर्गत प्रथम त्रैमासिक (अप्रैल से जून २०२३) सहायता २६ मार्च २०२३ आवेदक परिवारों को सीधे उन के bank account में हस्तांतरित की जा चुकी हैं ।

समाज के लिए सहयोग देने वाले सभी को विनम्रतापूर्वक आभार

सहयोग राशि भेजने के लिए :–

महासभा खाता विवरणः

Shri Mathur Chaturvedi Mahasabha

Saving A/C no.1006238340

ifs code– cbin0283533

Central bank of india

Branch– Anand vihar delhi

*सहायतार्थ राशि के हस्तांतरण की सूचना के साथ ई–मेल आई डी तथा दूरभाष की

जानकारी देने की भी कृपा करें।

मुनींद्र नाथ चतुर्वेदी, मंत्री

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा

Mob. 9871170559

चतुर्वेदी चंद्रिका, चतुर्वेदी पत्रिका एवं चतुर्वेदी के संपादक

1 पंडित राधा कृष्ण जी सिकंदरपुर चतुर्वेदी चंद्रिका सन् 1890

2 पंडित लक्ष्मीधर जी मैनपुरी चतुर्वेदी चंद्रिका 1894

3 पंडित लोकमणि दास जी मैनपुरी चतुर्वेदी चंद्रिका 1895

4 पंडित केदारनाथ जी पिनाहट चतुर्वेदी पत्रिका फरवरी 1895 से 1900

5 पं. गोकुल चंद जी चतुर्वेदी पत्रिका 1900 से

6 पंडित राधा कृष्ण जी सिकन्दरपुर चतुर्वेदी 1915

7 पंडित सत्यनारायण जी शर्मा आगरा चतुर्वेदी 1916 से 1918

8 पंडित आनंदी प्रसाद जी मलेपुर चतुर्वेदी 1918 से 1922

9 पंडित गिरधर शर्मा जयपुर चतुर्वेदी 1922 से 1925

10 पंडित प्यारे मोहन जी इटावा 1925 से 1929

11 पंडित कालिका प्रसाद जी 1931 से

12 पंडित सूर्यनारायण जी मिश्र मिर्जापुर सन् 1934 से 1939

13 पंडित लाडली प्रसाद जी अनूपशहर 1940 से

14 पंडित महावीर प्रसाद जी 1941 से 1946 लखनऊ से

15 पंडित ऋषिकेश जी अगस्त 1947 से दिसंबर 1950 तक

16 पंडित सूर्यनारायण जी मिर्जापुर 1950 से 1954

17 पंडित सुरेश चंद जी फरौली 1954 से 1956 तक

18 पं. राजेश्वर प्रसाद जी आगरा जुलाई 1956 से अगस्त 1960

19 पंडित अयोध्या प्रसाद जी आगरा

20 पंडित भरत चंद जी मैनपुरी इलाहाबाद

21पंडित महेश चंद जी (कार्यवाहक संपादक)

22 पंडित प्रेम नाथ जी भरतपुर 1972 से 1976 तक

23 पंडित गजाधर प्रसाद जी तरसोखर/ग्वालियर नवंबर 1976 से सितंबर 1986

साभार - महासभा शतपदी पुस्तक

24 पंडित मुनीन्द्र मोहन जी इटावा 1986 से

25 प्रोफेसर हरेश चंद जी पुरा 1990 से

26 पंडित दिनेश चन्द्र जी मैनपुरी 1989 से

27 डॉक्टर मीरा जी ग्वालियर 1996 से

28 श्री रमेश चंद जी मैनपुरी 1998

29 पंडित रविंद्र नाथ जी इटावा 1998 से 2002 तक

श्री पुरुषोत्तम जी मथुरा सितंबर 1999 से 2002 तक श्री रवीन्द्र नाथ जी प्रधान सम्पादक के साथ सम्पादक

30 पं. मिथिलेश जी होलीपुरा 2002 से 2005

31 श्रीमती विनीता जी भोपाल 2005 से जून 2018 तक

32 डॉ. कुश जी इटावा अगस्त 2018 से अक्टूबर 2020 तक

33 श्री शशांक जी कछपुरा/भोपाल 4 अक्टूबर 2020 से निरन्तर

विशेषांकों के सम्पादक

1 पं. बनारसीदास जी फिरोजाबाद सन् 1927 मे पं. प्यारेलाल जी स्मृति विशेषांक

2 पं. विश्वेश्वर दयाल जी विशारद सिकन्दरपुर एवं पं. लक्ष्मीनिधि जी मैनपुरी सन् 1930 मे महिलांक के सम्पादक

3 पं. राजेश्वर प्रसाद जी आगरा सन् 1943 मे पं. शम्भूनाथ जी मिश्र स्मृति विशेषांक

4 श्री सतीश चन्द्र जी आगरा सन् 1962 कवि अंक

5 पं. महेन्द्र नाथ जी होलीपुरा महासभा रजत जयन्ती और हीरक जयन्ती स्मारिका

6 डॉ. कुश जी इटावा एवं श्री भरत जी होलीपुरा सन् 2021 मे कविता विशेषांक के अतिथि सम्पादक

साभार - महासभा शतपदी पुस्तक

महासभा के सभापति और उनके मंत्री

क्र.	अधिवेशन वर्ष	अधिवेशन स्थान	सभापति महोदय	मंत्री महोदय
1.	1920	मथुरा	दानवीर बैजनाथ जी, इटावा	पं. प्यारेलाल जी, चंद्रपुर
2.	1922	मैनपुरी	पं. राधेलालजी वकील, मेरठ	पं. चंपारामजी, फिरोजबाद
3.	1923	कलकत्ता	पं. म.म.पा. गिरिधर शर्मा, जयपुर	पं. जगदीश प्रसाद जी, फर्रुखाबाद
4.	1925	मथुरा	पं. प्यारेलालजी चंद्रपुर	
5.	1926	इटावा	पं. मुन्नालाल जी मिश्र	
6.	1927	ग्वालियर	पं. राधेलालजी 'डिप्टी साहब', होलीपुरा	
7.	1929	कानपुर	पं. गिरिधर शर्मा जी, जयपुर	
8.	1930	इलाहाबाद	पं. जगन्नाथ प्रसाद जी	
9.	1932	इटावा	पं. मुन्नालालजी मिश्र	
10.	1933	इटावा	पं. विश्वेश्वर दयालजी विशारद	
11.	1934	आगरा	कुँवर कृष्णचंद्र जी,	पं. निर्मलचंद्र जी, कछपुरा
12.	1936	लखनऊ	पं. शालिग्राम जी पाठक	
13.	1938			
	1938	कानपुर	राय साहब लक्ष्मीनारायण जी मिश्र	
	1939	कलकत्ता	दादा श्रीनिवासजी (अंतरिम सभापति)	
14.	1941	बाह	श्री नारायण जी	
15.	1943	दिल्ली	राय साहब लक्ष्मीनारायण,	धर्मगोपाल जी पुरा
16.	1945	पिनाहट	पं. जगदीश प्रसाद जी	
17.	1948	आगरा	पं. जगदीश प्रसाद जी	
18.	1950	फर्रूखाबाद	पं. निर्मलचंद्र जी, कछपुरा	रामस्वरूप जी
19.	1956	लखनऊ	पं. निर्मलचंद्र जी	
20.	1960	इलाहाबाद	प्रो. चंपारामजी,	पं. रघुनाथ प्रसाद जी

साभार - महासभा शतपदी पुस्तक

21. 1968	आगरा	पं. मिश्रीलालजी,	पं. लक्ष्मण प्रसाद जी
22. 1972	आगरा	पं. शंभुनाथ जी	पं. वृंदावन बिहारी जी
23. 1976	फरौली	मास्टर रामलालजी	पं. उपेन्द्र जी
24. 1981	कानपुर	पृथ्वीनाथजी	पं. महेन्द्रनाथ जी
25. 1985	चंद्रपुर	गजाधर प्रसाद जी,	पं. नरेशचंद्र जी, कटहल
			पं. नेमचंद्र जी, चंद्रपुर
26. 1989	हरदोई	पं. ब्रजेन्द्रनाथ मिश्र	उपेन्द्रनाथ जी
27. 1995	वाराणसी	महेशप्रसाद जी	नीलमणि कुमार
28. 1998	बम्बई	सुरेशचंद्रजी,	मिथिलेश जी
29. 2002	नागपुर	केदारनाथ जी,	सर्वेशजी, डॉ. प्रदीप जी
30. 2005	भोपाल	भरतचंद्रजी,	डॉ. प्रदीप
31. 2009	नेमीषारण्य	राजेन्द्रनाथ जी,	डॉ. प्रदीप
32. 2013	नयी दिल्ली	राजेन्द्र जी,	डॉ. प्रदीप
33. 2017	मैनपुरी	कमलेश चंद्र पांडेय,	मुनीन्द्रनाथजी
34. 2020	नयी दिल्ली	डॉ. प्रदीप जी,	मुनीन्द्रनाथ जी

विशेष अधिवेशन

1. 1937	आगरा	पं. मदन मोहन जी, इटावा
2. 1939	बाह	पं. लक्ष्मीनारायण मिश्र, मई
3. 1939	कलकत्ता	पं. रामनारायण जी, प्रयाग

साभार - महासभा शतपदी पुस्तक

समाज समाचार

- कनिका पुत्री श्री अनुराग चतुर्वेदी (मैनपुरी/देवास) ने वर्ष सीबीएसई 10th बोर्ड परीक्षा 80 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण की। हार्दिक बधाई।

***

- दिनाँक 8 जुलाई 2023 को डॉ. निशीथ कुमार चतुर्वेदी (आगरा/गुरुग्राम) को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से राम

मनोहर लोहिया अस्पताल,देहली के PGIMER ऑडिटोरियम,देहली में एक भव्य समारोह में सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. एस पी एस बघेल (मिनिस्टर ऑफ़ स्टेट, स्वास्थ्य तथा परिवार कल्याण मंत्रालय,भारत सरकार) थे। बधाई।

***

- GEE ग्रेटेस्ट एंपरर एंड एजुकेशन के वीमेन लीडर्स फोरम द्वारा डॉ. शालिनी शिशिर चतुर्वेदी (मैनपुरी/गुरुग्राम) को बेस्ट एस्ट्रोलॉजर ऑफ द ईयर 2023 का अवॉर्ड दिया गया। यह कार्यक्रम होटल क्राउन प्लाजा दुबई में दिनाँक 31 मई 2023 को आयोजित किया गया। बधाई।

***

- कु. विधी चतुर्वेदी पुत्री श्री हितेश चतुर्वेदी-श्रीमती स्मृति चतुर्वेदी (दिल्ली/बिजकौली) ने 10 वी की परीक्षा (सीबीएसई) बोर्ड से 86%से उत्तीर्ण की बधाई ।

***

- चि. प्रारब्ध चतुर्वेदी सुपुत्र श्री पुनीत कुमार - श्रीमती क्षमा चतुर्वेदी (गोहद/ ग्वालियर/ मुरैना) का शुभ विवाह सौ. निष्ठा चतुर्वेदी पुत्री श्री नीरज - गीता चतुर्वेदी (मैनपुरी/ दिल्ली) के साथ दिनांक 22 फरवरी 2023 को संपन्न हुआ। इस अवसर पर आपने महाविद्या देवी मंदिर सहायतार्थ 1100/- रुपए व पत्रिका सहायतार्थ 1100/- प्रदान किए। बधाई। (र. क्र. - 1449)

***

- अंकुर पुत्र श्री अरुण चतुर्वेदी मैनपुरी/आगरा का विवाह कु०मेघा चतुर्वेदी पुत्री श्री घनश्याम दास चतुर्वेदी तरसोखर/ दिल्ली के साथ दिनाँक 26 जनवरी 2023 को वृंदावन में संपन्न हुआ। इस अवसर पर अरुण जी ने रुपये 251/- महासभा एवं रुपये 250/- पत्रिका हेतु प्रदान किये। बधाई। (र.क्र.-1334)

***

- सुप्रसिद्ध साहित्यकार,पद्मश्री से सम्मानित डॉ. विद्याबिंदु सिंह

की संस्था द्वारा डॉ. अरविन्द चतुर्वेदी जी के सामाजिक और पुलिस कार्यों को मान्यता देते हुए श्री कृष्ण प्रताप सिंह स्मृति सम्मान से दिनाँक 10 जुलाई को अलंकृत किया गया। बधाई।

***

- श्री अंकित चतुर्वेदी सुपुत्र श्री दिनेश चतुर्वेदी (मथुरा/लखनऊ) भारत वर्ष के उच्चतम न्यायालय के पंजीकृत एडवोकेट (Advocate-On-Record) बने। इस अवसर पर दिनेश जी ने पत्रिका सहायतार्थ 2100/- रुपये प्रदान किये। बधाई। (र.क्र.-1450)

***

■ सुश्री सुवर्णा चतुर्वेदी पुत्री श्री शोभित चतुर्वेदी एवं श्रीमती वैशाली चतुर्वेदी (कछपुरा/कानपुर) ने अपनी बीए - एलएलबी (I) की पढ़ाई एमिटी लॉ स्कूल, देहली- गुरु गोविंद सिंग, इंद्रप्रस्थ (GGSIPU) से वर्ष 2022 में संपन्न करते हुए अपने प्रथम प्रयास में ऑल इंडिया लॉ एंट्रेंस टेस्ट (AILET), 2023 की परीक्षा पोस्ट ग्रेजुएशन के लिए उत्तीर्ण की। जिसमें वह पूरे भारत में सामान्य वर्ग में चयनित शीर्ष 30 बच्चों में रहीं। बधाई।

***

■ स्व. रमाकान्त जी एवं वीणा जी की पुत्र वधू स्व. जया पत्नी अनिमेष (सोना) मैसूर कर्नाटक में एक प्राइमरी स्कूल प्रारंभ किया था। अब उनके पति ने इस स्कूल की अपनी नई बिल्डिग में शिफ्ट कर दिया है और अभी मिडिल तक है। यह समाचार मैसूर के टाइम्स ऑफ इंडिया के edition ने छापी है।

बिछड़े स्वजन

* श्री हरिकांत चतुर्वेदी पुत्र स्व. खरगजीत चतुर्वेदी (होलीपुरा/कानपुर) का दिनाँक 8 जुलाई 2023 को कानपुर में स्वर्गवास हो गया।

***

* श्रीमती अंजू पत्नी श्री अनिल चतुर्वेदी (पुरा/कोलकाता) का स्वर्गवास दिनाँक 10 जुलाई 2023 को कोलकाता मे हो गया।

***

* श्रीमती रेखा चतुर्वेदी पत्नी श्री हिरेन्द्र चतुर्वेदी (इटावा/जयपुर) का स्वर्गवास 19 मई 2023 को जयपुर में हो गया।

***

* श्री पद्माकर चतुर्वेदी पुत्र स्व. विलासराव चतुर्वेदी (होलीपुरा/कानपुर) का स्वर्गवास दिनाँक 14 जुलाई 2023 को कानपुर में हो गया।

***

* श्रीमती नीलम चतुर्वेदी पत्नी श्री सुभाष चंद्र जी (कमतरी/आगरा) का स्वर्गवास दिनाँक 14 जुलाई 2023 को आगरा में हो गया।

***

* श्रीमती अर्चना चतुर्वेदी पत्नी श्री दीपचंद चतुर्वेदी (तालगांव/लखनऊ) का स्वर्गवास दिनांक 16 जुलाई 2023 को लखनऊ में हो गया।

***

* श्री अरविन्द चतुर्वेदी पुत्र स्व श्री दयाराम चतुर्वेदी जी का स्वर्गवास दिनाँक 17 जुलाई 2023 को हो गया।

***

* श्री अजीत चतुर्वेदी पुत्र स्व. श्री गयाशंकर (भरतपुर/ग्वालियर) का स्वर्गवास दिनाँक 18/07/23 को आगरा में हो गया।

***

* श्री आशीष चतुर्वेदी पुत्र स्व.अरुण चतुर्वेदी (कमतरी/बाह) का असामयिक स्वर्गवास दिनाँक 20 जुलाई 2023 को अल्पायु में एक रेल दुर्घटना में आंतरी/ग्वालियर में हो गया।

***

* श्री अजय चतुर्वेदी पुत्र स्व. नरेन्द्र नाथ जी (इटावा) का स्वर्गवास दिनाँक 2 जुलाई 2023 को आगरा में हो गया।

महासभा एवं चतुर्वेदी चंद्रिका परिवार दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

(र.क्र. 2023/1639)

R.N.I. NO. MAR/2000/2438
डाक पंजीयन संख्या म.प्र. / भोपाल / 44 / 2021–23
''चतुर्वेदी चन्द्रिका'' अगस्त 2023

पत्र व्यवहार का पता– ''चतुर्वेदी चन्द्रिका'' ई–8 / जी–2 / 255,
गुलमोहर कॉलोनी, अरेरा कॉलोनी, भोपाल–39,
ईमेल –sampadak.chaturvedichandrika@gmail.com

स्वतंत्रता दिवस एवं रक्षा बंधन की हार्दिक बधाई

डॉ. सतीश चतुर्वेदी अपनी बड़ी बहन शरद जिज्जी के साथ ।
अविस्मरणीय क्षण ।

सौ. आभा जी – श्रीमती शोभा जी अपने भाई अजय जी एवं डॉ. सतीश चतुर्वेदी इनके साथ ।

(र.क्र. 1295)9/12